अलगोजो

(राजस्थानी कविताओं का सकलन)

सपादक

श्री श्रीमत कुमार व्यास

प्रकाशक

नवयुग ग्रंथ कुटीर

बीकानेर

मूल्य २)

पहला संस्करण

मुद्रक
गेरचद सक्सेना
एजूकेशनल प्रेस, बीकानेर

अभिनन्दन

राजस्थानी भाषा का काव्यभंडार अगणित रत्नों से पूर्ण है। और यह अद्भुत सचाई है कि आग की लपटों से प्रज्ज्वलित, फूलों के रस से मधुमय, भक्ति की मन्दाकिनी से पावन और जीवन की ज्योति से जगमग उस मध्यकालीन काव्यधारा की विरासत आज के राजस्थानी कवि हृदय ने सजो कर रक्खी है। उसने अपने आपको उस महान निधि का उपयुक्त सरंक्षक सिद्ध कर पाठक की धारणा को पूरी तरह बदल दिया तथा राजस्थानी भाषा के पूर्व गौरव को स्थापित करने में अपूर्व सफलता प्राप्त की है। श्री व्यास ने इस 'अलगोजो' द्वारा आज के इन ओजस्वी कवियों को जनता तक पहुंचाने का स्तुत्य प्रयास किया है। काव्य उपवन से जिन फूलों का चयन इस ग्रंथ में किया गया है वे अपनी सुरभि से पहले ही दिग्दिगत को सुवासित कर रहे हैं पर हार के रूप में उन्हें गूँथने का श्रेय श्री व्यास को ही है। इसके लिए वे निश्चय ही बधाई के पात्र हैं।

—शम्भूदयाल सकसेना

आधुनिक राजस्थानी कविता

राजस्थानी भाषा की प्राचीन कविता एव लोक साहित्य के विषय मे भारत के प्रसिद्ध विद्वानों एव नेताओं की सर्वदा उच्चतम मान्यताए रही हैं चाहे वह प्रकाशित हों या अप्रकाशित। इस विश्रृंखल किन्तु स्वत स्फूर्त, अनियमित किन्तु ओजस्वी तथा अनेक रूपमय किन्तु रस परिपूर्ण साहित्य की कड़िया जिसने भी कहीं सुनीं या पढ़ीं वह उसकी श्लाघनीयता को स्वीकारे बिना नहीं रह सका उसकी जिह्वा से सराहना के दो शब्द निकले बिना नहीं रह सके। किन्तु कई कारणों से हमारे वैसे साहित्य का सृजन बन्द हो गया। अत उसपर प्रकाश डालने की आवश्यकता महसूस नहीं करते हुए आधुनिक कविता को सुविधा के लिए निम्न भागों मे विभक्त कर देना उचित समझता हूँ। यह विभाजन मैंने कविताओं के ही अधार पर किया है।

१ प्रचारात्मक कविताएँ

२ कथामयी कविताएँ

३ प्रगतिशील कविताएँ

आधुनिक राजस्थानी मे कविता की यह त्रिवेणी शान के साथ कल्लोल करती हुई प्रवाहित हो रही है। इस त्रिवेणी की प्रथम धारा प्रचारमयी है जिसके प्रणेता श्री माणक्यलाल वर्मा हैं। श्री वर्मा राजस्थान के ख्यातिप्राप्त लोकप्रिय कांग्रेसी नेता हैं। अगरेजी हुकूमत मे राजाशाही के जुल्मों से रौंदे

हुए किसान एव मजदूर वर्ग में अपनी कविताएँ सुना सुना कर अेक चेतना भरने का प्रयास इन्होंने इस तरह किया

"उठ झठ भयाबो ले सीख कमाई थारी थारे बच जावे,
तू कात रेंटियो कपड़ो कर ले पैसो घर में बच पावे,
कर गाव गाव री जात जात री एकठ फेर सभल जा तू
यू जाट, कुम्हार, चमार सभी भाई रो भाई बण जा तू"

इधर अेक तरफ मेवाड़ मे श्री वर्मा ने जिस धुइन मे प्रचार किया उसी धुइन मे मारवाड में लोकनायक जयनारायण व्यास ने अपनी राजस्थानी कविताओं द्वारा सोयी हुई चेतना को जाग्रत किया। दुख है कि इस समह के लिए उनकी अेक भी कविता हमें प्राप्त नहीं हो सकी। श्री व्यास के साथ श्री गणेश लाल व्यास 'उस्ताद' ने भी अपनी कलम से मारवाड़ की राष्ट्रीयता जगाने मे सहायता दी। "मुलक नै मोट्यारा माथा देणा पड़सी" कविता का जनता पर अच्छा असर पड़ा। आज तो उस्ताद ने नई दिशा ग्रहण करली है। राष्ट्रीय नेताओं पर पूंजीपतियों को हावी समझ कर उसकी कलम कठोर सत्य का सृजन कर रही है।

"समझणा री साख सड़गी वीरता बेमार पड़गी
लीडरां री लायकी में बाणिया री बास चड़गी।"

साम्यवाद का पक्का हिमायती 'उस्ताद' सरकारी शृंखलाओं मे आबद्ध होते हुए आज तो कहता है कि अब हजूरों की बात बीत चली है।

"इण धरती री धणियाप खरी हाली री फुलवाड़ी है माली री
धणी-सपत सैन मजूरां री अब बीती बात हजूरां री"

इधर सिरोही मे श्री गोकुल भाई भट्ट ने अपनी राजस्थानी कविताओं द्वारा सोयों को उठाया [समह के लिए कविता प्राप्त नहीं हो सकी]

तो उधर जयपुर में श्री हीरालाल शास्त्री ने। आज तो श्रीशास्त्री ही ऐसे कहे जा सकते है जिन्होंने राज्यलक्ष्मी के दमघुटाऊ वाता वरण से मुक्ति पाकर प्रेम के साथ मा सरस्वती के चरणों मे राजस्थानी कविता कुसुम चढाए हैं। अपनी कविताओं मे वे आज भी वैसे ही प्रचारक हैं। ऐसा मालूम होता है कि मानो अब उनमें निस्पृहता आगई है। 'फक्कड भाव" उनकी ऐसी ही कविता है।

"दुनियाँ का मामूली बाधा फक्कड़ आवे लोप,
सत सूं धूणी तपै सनातन जमै चीमटो रोप।
लाग लपेट जरा नहीं राखै चालै सदा सट्ट
साचो फक्कड़ बणवा सूं ही बेसक होवै ट्ट।"

इस प्रकार आधुनिक कविता की एक धारा ऐसी चली कि सामाजिक एव राजनीतिक चेतना लाने के लिए श्री माणक्य लाल वर्मा द्वारा चलाई गई परम्परा का सारे राजस्थान मे अनुसरण हुआ। किन्तु काव्यत्व के दृष्टिकोण से श्री वर्मा इन सब मे आगे रहे। उनकी प्रचार कविताए जितनी जानदार एव शानदार होती थी वैसी किसी की भी नहीं हुई।

इस त्रिवेणी की दूसरी धारा कथामयी है जिसके प्रवर्तक श्री मेघराज वर्मा मुकुल हैं। श्री मुकुल आधुनिक राजस्थानी कविता की सजीव वाणी हैं। इनकी सर्व प्रथम राजस्थानी कविता 'सैनाणी' में मेवाड़ के वीर सरदार चूड़ावत की कहानी है। 'सैनाणी' लिख कर जहा एक तरफ मुकुल ने राजस्थानी कविता को प्रेरणा दी है वहा उसे गाकर राजस्थानियों के हृदयों मे तो अपनी मातृभाषा के प्रति ममत्व पैदा किया ही है साथ ही अन्य प्रान्त के नागरिकों का ध्यान भी राजस्थानी की विशेषताओं की तरफ आकृष्ट किया है। श्रीकन्हैयालाल सेठिया की प्रसिद्ध रचना "पातल और पीथल" एव श्री कल्पेश की रचनाए भी इसी कक्षा मे लिखी गई कथा

मयी कविताए हैं।

राजस्थान में प्रकृति काव्य लिखने का उद्घाटन श्री कन्हैयालाल सेठिया ने किया। श्री सेठिया की रचना 'खेजड़लो' बहुत ही सजीव रचना है।

"म्हारे मुरघर रो है साचो सुख दुख साथी खेजड़लो
तिसां मरे पण छिया करे है करड़ी छाती खेजड़लो।
आँसू पीकर जीणो सीख्यो एक जगत में रोजड़लो
से मिट जासी अमर रवैलो एक जगत में खेजड़लो।"

श्री सेठिया की इस क्लास मे बैठकर श्री चन्द्रसिह ने 'बादली' तथा श्री नानूराम सस्कर्ता ने "कलायण" नाम की रचनाए लिखीं जो स्वतन्त्र रूप से प्रकाशित भी हो चुकी हैं। बादली प्रकृति काव्य की एक अच्छी रचना है। कु० कानसिह भाटी की रचनाए भी इसी श्रेणी मे आती हैं।

इस त्रिवेणी की तीसरी धारा प्रगतिशील है जिसके नेता साथी रेंवतदान चारण 'कल्पित' हैं। श्री रेंवतदान ने राजस्थानी कविता को बहुत २ आगे बढा दिया है। उसने भाषा को जो प्रवाह दिया है वैसा सिवाय श्री सेठिया, एव श्री चन्द्रसिह के अन्य कोई नहीं दे सका। राजस्थानी का यह दिनकर कविता मे जो उजास भर रहा है वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। स्व० मनुज देपावत, श्री भारती भूषण श्री त्रिलोक शर्मा एव श्री भीम पाडिया आदि इसी श्रेणी के कवि हैं। श्री रेंवतदान को कल्पना सजीव, सूझ बूझ अनूठी एव उक्ति वैचित्र्य अद्वितीय है। गाधीजी की हत्या पर उसने जो कविता लिखी उस 'सासो' मे इन तीनो बातों का समिश्रण देखिए —

'हुती जे फूल री मन में कमल ने तोड़ लेयो हो
हुती जे रूप री मन में पूनम रो चाद लेयो हो
हुती जे जोत री मन में सूरज ने माग लेयो हो

हुती जे मिनख री मन में तो कोई भूप लेयी हो।'

इसके अतिरिक्त राजस्थानी में अनुवाद भी हुए हैं जिनमें कवियों को आशातीत सफलता प्राप्त हुई है। श्री अमर [!] देपावत ने उमर खैय्याम की रूबाइयों का सरस अनुवाद किया है तथा श्री कु० नारायणसिंह ने कालीदास की अमर शृङ्गार कृति 'मेघदूत' का। दोनों ही अनुवादों के नमूने संग्रह मे दिए गए हैं। इनको देखकर आप कवियों की सफलता का अंकन कर सकते हैं। इधर श्री गजानन प्रसाद वर्मा ने नए लोकगीत लिखकर प्राचीन परंपरा को नए तरीके से जिन्दा करने का सफल प्रयास किया है।

इस तरह राजस्थानी कविता बहुत ही शीघ्रता के साथ प्रवाह मान हो रही है। कविता का भविष्य उज्ज्वल प्रतीत हो रहा है। कुछ इने गिने कवियों को पाकर भी राजस्थानी कविता अपना मार्ग प्रशस्त करने में सलग्न है।

इस कविता संग्रह मे हम राजस्थान के सारे कवियों की रचनाएं नहीं दे पाए हैं। संग्रह में ऐसे बहुत से कवि रह गए हैं जो प्रयत्न करने पर भी नहीं आ सके परन्तु उनकी रचनाएं उत्कृष्ट कोटि की हैं। जैसे श्री गणपति स्वामी, श्री मनोहर शर्मा, श्री भरत व्यास, श्री सुबोध कुमार अग्रवाल, श्री महालचद बोथरा, श्री चन्द्रसिंह, आचार्य रामनिवास हारित, श्री लक्ष्मीदत्त बारहठ, श्री अद्भुत शास्त्री आदि आदि। अवसर मिलने पर एक अन्य संग्रह अवशिष्ट कवियों की रचनाओं का प्रकाशित करने की मेरी उत्कट अभिलाषा है।

इस संग्रह मे जिस क्रम से कवियों की रचनाएं दी गई हैं उनका न तो कोई स्थान निश्चित किया गया है और न कोई कविताओं के स्टंडर्ड का ही मापदंड माना गया है। मैंने अपनी सुविधा के अनुसार ही ऐसा क्रम रख दिया है।

समय पर प्रूफ नहीं देखने के कारण यत्र तत्र प्रूफ की अशुद्धियें अवश्य रह गई हैं किन्तु आगामी सस्करण में वे अवश्य सुधार दी जायेंगी

सग्रह में मैंने राजस्थान के सभी हिविजनों की रचनाए देनी चाही थी किन्तु कई जगह से रचनाए प्राप्त नहीं होने के कारण मेरा मनोरथ पूरा नहीं हो सका। भविष्य मे उसे पूरा करने का प्रयत्न किया जायगा।

यहाँ मै अपने गुरुवर प० अक्षयचन्द शर्मा का आभारी हू कि जिनकी महत् प्रेरणा से यह राजस्थानी कविता का प्रथम सग्रह आपकी सेवा मे प्रस्तुत कर रहा हू। साथ ही सग्रह के सभी कवियों एवं एजूकेशनल प्रेस के व्यवस्थापक कु० शेखरचद सकसेना का कि जिनके सहयोग से सग्रहित होकर यह रचना प्रकाशित हो सकी।

राजस्थानी रचनाओं का यह प्रथम सग्रह 'अलगोजो' मैं इस दृढ़ विश्वास के साथ आपको सौंप रहा हूँ कि आप निश्चित रूप से राजस्थानी भाषा को ओर आकृष्ट होंगे तथा इसकी सुरीली आवाज सारे भारतवर्ष मे गुञ्जा देंगे।

व्यास कुटीर
लाडनू [राजस्थान]
३ दिसम्बर १९५३

श्रीमत कुमार व्यास
मंत्री
राजस्थानी साहित्य सम्मेलन
बीकानेर

विषय-सूची

१ प्रो० मुकल एम ए	१ से १५
सैनाणी, कोडमदे, लोरी	
२ श्री कन्हैयालाल सेठिया	१६ से २४
पातल और पीथल, बापू, खेजड़लो	
३ श्री रेवतदान चारण 'कल्पित'	२५ से ३१
इन्किलाब री आँधी, सासो, महालिछमी	
४ श्री मनुज देपावत	३२ से ३६
रे धोरा आला देश जाग, जद झुकै शीश	
५ श्री प्रेमचन्द रावल "निरकुश"	३८ से ४१
मजदूरण री भोलावण, घसियारी	
६ श्री माणक्यलाल वर्मा	४२ से ४५
किसान	
७ श्री गणेशलाल व्यास "उस्ताद"	४६ से ५३
बीती बात हजूरा री, जाग रणयका सिपाइ, पिय आगै आगै हालो	
८ श्री अमर देपावत	५४ से ५७
मस्ती रो सदेश	
९ श्री भीम पांडिया	५८ से ६१
दिवलै री जोत	
१० श्री हीरालाल शास्त्री	६२ से ६९
पुराणी पू जो, नराम सुगणयो, ललकार फरक्कड़ भार	
११ श्रीमती रानलक्ष्मी 'साधना'	७० से ७४
जिग रच्यो राजनी, गीत, गीत	
१२ श्री जगमोहनदास मू धड़ा	७५ से ७८
गीत	

१३ कु'वर मानसिंह भाटी — ७६ से ८५
अंग्रेज गया पण अ'गरेजी तो रहगी,
चौमासो, सियालो, ऊनालो, पींडत, डाक्टर,
साहूकार
१४ श्री गजानन प्रसाद शर्मा — ८६ से ९१
परभातै रो गीत, चौमासै रो गीत
सावण भादवै रो गीत
१५ श्री सूर्यशंकर पारीक 'भारती भूषण' — ९२ से ९६
बे क्यूं क्यूं कन्या नै ओढे, उडीका
१६ श्री नानूराम संस्कर्ता — ९७ से १०१
बसना री बात, दीन किसान
१७ श्री त्रिलोक शर्मा — १०२ से १०६
ऊगतो सूरज, चेतो कर कर चाल जवानी
१८ श्री नारायण सिंह भाटी — १०७ से १११
मेघदूत
१९ श्री रतनलाल दाधीच — ११२ से ११६
म्हा नैणा री, सीधो सीधो चाल,
माखन गोल
२० श्री श्रीमन्त कुमार व्यास — ११७ से १२७
राजी, गीत, आंख्यू डी, घरूवो घरूरी,
दुन्निलाय सो आमी रे
२१ श्री कन्हैयालाल सेठिया ※ — १२७ से १२८
टमरक टू, धलगोजो

※ ये रचनाएं बाद में प्राप्त होने से इनकी पहली रचनाओं के साथ नहीं आ सकीं।

अरमाण सुहाग रात रा ले, रजपूतण मैलां में आई,
ठमके सूं ठुमक ठुमक छम छम चढगी मैलां में शरमाई,
पण बाज रयी थी शहनाई, मैलां में गूंज्यो शरानाद,
अधरां पर अधर धिरचा रहग्या, सरदार भूलग्यो आलिंगण,

प्रो० सकल राम, ग

[परिचय—प्रो० मुकुल राजस्थान रा वे अमर कवि है जिए हिन्दुस्तान रै हरेक प्रान्त में आपरी कवितावां द्वारा राजस्थानी भाषा रो माथो ऊचे उठायो है। मुकुलजी री भारत-व्यापी लोकप्रियता रो कारण ही इणां री राजस्थानी कविता 'सैनाणी' है। जिणरी तारीफ न खाली राजस्थान रा नेता ही बल्कि भारत रा प्रधान मन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू व समाजवादी नेता श्री जयप्रकाशनारायण भी टेम टेम माथै करी है।

श्री मैथिलीशरण गुप्त री 'भारत भारती' नै स्व० सुभद्राजी चौहान री 'झांसी वाली रानी' री तरियां इणांरी 'सैनाणी' रो भी भारत री जनता द्वारा मोकलो स्वागत होयो है। भावां री गम्भीरता, भाषा री मधुरता, कल्पना री स्वाभाविकता, व्यक्तित्व रो आकर्षण नै शैली रो नाटकीय ढंग इण सगली बातां रो मेल मुकुलजी में मिलै है। इणां सारू मुकुलजी प्रसिद्धि में हिन्दी रै किणी भी चोटी रै कवि सूं लारै नहीं रै सकिया।

'सैनाणी' रो कवि आजकाल खाली पुराणी परम्परा रा गीत ही नहीं लिख रयो है बल्कि जनजीवण नै आगै बढाण आज साहित्य निर्माण में लिख रयो है। वास्तव में मुकुलजी जनता रा कवि है नै लोकगायक है। राजस्थानी साहित्य नै उणां सूं आगै मोकली मोकली आसावां है।]

सैनाणी

सैनाण पड्यो हथलेवै रो
हिंगलू माथै पर दमकै ही,
रखड़ी फेरारी आण लिया
गमगमाट करती गमकै ही,

कांगण डोरो पुच्या माही
चुड़लो सुहाग ले सुघडाई,
मैंदी रो रग न छूट्यो हो
था बंध्या रह्या बिछिया थाई,

अरमाण सुहाग रात रा ले
रजपूतण मैला में आई,
ठमकै सू ठुमक ठुमक छम छम
चढ़गी मैला में शरमाई,

पोढण री अमर लिया आसा
प्यासा नैणा में लिय हेत,
चूडावत गठजोडो खोल्यो
तन-मनरी सुध बुध अमित मेट,

पण बाज रयी थी शहनाई
मैला में गूंज्यो शखनाद,
अधरा पर अधर धरया रहग्या
सरदार भूलग्यो आलिंगण,

रजपूती मूँ पीलो पड़ग्यो
बोल्यो रण मे नहीं जाऊँला,
राणी थारी पलका सहला
मैं गीत हेतरा गाऊँला,

आ बात उचित किण हद ताई
ज्यां मे भी चैन न ले पाऊँ,
मेवाड भलैई क्यू हो न दास
मैं रण में लडण नहीं जाऊँ,

बोली रजपूतण नाथ आज थे
मती पधारो रण माही,
तलवार बतावो में जासू
थे चूडी पेर रयो घर माही,

कह कूद पडी झट सेज त्याग
नैणा सू अगना भभक उठी,
चडी रो रूप धर्यो छिण मे
विकराल भवानी धमक उठी,

बोली आ बात जचै मानी
पति नै चाहूँ में मरवाणो,
पति म्हारो कोमल कू पल सो
फूला सो छिण मे मुरझाणों,

पेला तो समझ नहीं आई
पागल सो बैठ्यो रह्यो मूरख,
पण बात समझ मे जद आ ई
हो गया नैण मन्दम सूरख,

बिजली सी कड़की नस नस में
बांध्या कवच उतरयो पोडी,
हुंकार बम्म बम्म महादेव
ठक् ठक् ठक् ठबक चढ़ी घोड़ी,

पेला राणी नै हरस हुयो
पण फेर जान सी निकल गई,
कालजो मुँह कानी आयो
डब डब आंखड़िया पथर गई,

घायल सी भागी मैला में
फिर बाच झरोखा टिक्या नैण,
बारैं दरवाजै चूंडावत
उच्चार रयो थो वीर बैण,

नैणा सूं नैण मिल्या छिण में
सरदार वीरता बिसराई,
सेवक नै भेज रावलै में
अंतिम सैनाणी मंगवाई;

सेवक पहुंच्यो अंतपुर में
राणी सूं मांगी सैनाणी,
राणी सहमी फिर गर्ज उठी
बोली–कह दे मरगी राणी,

फिर कह्यो–ठैर ले सैनाणी
कह झपट खड़ग खींच्यो भारी,
सिर कट्यो हाथ में उछल पड्यो
सेवक भाग्यो लै सैनाणी,

सरदार उछलियो घोड़ी पर
बोल्यो-ल्या ल्या ल्या सैनाणी,
जद कट्यो सीस दख्यो हसतो
बोल्यो राणी म्हारी राणी,

थे शुभ सैनाणी दी राणी
है धन्य धन्य तू छत्राणी,
मैं भूल चुक्यो थो रण पथ नै
तू भलो पाठ दीनो राणी,

कह एड लगाई घोडी रै
रण बीच भयकर हुयो नाद,
केहरि उठ्यो चिंघाड़ मार
अरिदल रै माथै पडी गाज,

सरदार विजय पाई रण में
सारी जगती बोली जै हो,
रणदेवी री, मनदेवी री
मा भारत री जै हो जै हो,

कोडमदे

दल बादल उमड्यो हेल्या रो
लसकर थाम्यो भी थमै नहीं,
कवरी रा मैंदी रंगराता
डगमग पग डिगता जमै नहीं,

धीमै धीमै हलरा हलवा
सपना रो दिवलो सजोया,
चाली कोडमदे नैण भरया
दुविधा में अपणी सुध खोया,

सादूल बाघ मीठा सपना
उजली रजणी नै याद करै,
साथ्या रो साथ कदै लेवै
पुणि कदै लारनै कदम धरै,

मोत्या बिचली माणक लाडल सी
लाल काढ यो कुण जावै,
कुण बूझै गोरी रै मन री
बीजो माणस यूं क्यूं भावै,

ममता री तणिया सी खींचै
भीजै पलका होवै गल गल,
सिरखै, छिरखै, थिरकै मन में
उलझै गठ बंधण में पल पल,

बाबल री हियो भर्यो आयो
नैणां में समदर सा उमड़्यो,
काल्है डूंगर री धरती पर
कुण बिरह बादली ले घुमड्यो,

घर नै सूनो सूनो छोड्या
पारया पसार चिड़कोली जा,
पुणि आणै री आसा बिसार
मुख मोड्या या कुण जा कुण जा

ओल्यूं रा सुर धीमा पड़ग्या
डोली पूरब कानी चाली,
मिंझया झुरमुटिया मे लुक छुप
ल्याई डुर री रजनी काली,

दो नैण लाज सूं भाज रया
दो रूप तृपा सूं सीझ रया,
दोन्यां रा सपना जाग रया
इक दूजे पर दोऊं रीझ रया,

डगमग डगमग डोलै डोली
हलवा हलवा चालै डोली,
दोन्या रै हिवड़ै हूक उठै
पण दोऊ मुख निकलै ना बोली,

ज्यूं होठ हिलै त्यूं सास चलै
पुणि हाथ पड़ै धड़कै छाती,
सरमाणै री है बात किसी
जद इक दूजै रा म्हे साथी,

सूनै मारग पर चाद ऊग
रजणी रो अंधियारो धोवै,
डोली आगै दायँ बायँ
सादूल साथिया नै जोवै,

ज्यू चाद चादणी लिया साथ
नभ रै तारा मे रान रयो,
रणवीर लिया कोडमदे नै
साथ्या मे वैसो साज रयो,

इतणै मे सूनै मारग पर
ठक् ठक् ठक् टाप सुण्या भारी,
आरया रा डोरा लाल कर्या
रतनारा नैण तण्या भारी,

नस नस मे खून जम्यो पिघल्यो
कडकी बिजली धडकी छाती,
फड फड फड करती टूट पडी
अरडक री सेना मदमाती,

लप लप करती तलवार थाम
सादूल खड्यो थो सावधान,
रण वाला कमर कस्या निकली
सब छोड लाज लै एक प्राण,

सुण शखनाद गज चिंघाड्या
हय हींस्या, म्याना खिंची खग,
तडपी बिजली सी नस नस में
छेड्यो यक्षा विकराल जग,

रण महाकाल भिड़्या भैरव
गरज्या आपस में ठोक ताल,
भाला सूं सींची खाल खाल
तीरां सूं बींध्या चाल चाल,

लोहू लुहाण चलती कृपाण
चमकीला छांटा लाल लाल
मदमत्त वीर धर रूद्र रूप
छांटी तलवारां खड़ा ढाल,

अमरार पड़्या ज्या ज्या पछाड़
ली भट भवानी रूण्ड माल,
झट शीश कट्यो आई भुचाल
धड़ पड़्यो धरा पर खा उछाल,

बादल गाज्यो, अम्बर काप्यो
फिर एक बार हुंकार उठी,
वर और वधू रै हाथां में
प्रलयकारी तलवार उठी,

खुल दूर पड्यो कांगण डोरो
बहग्यो सिंदूर पसीनै मे,
मर्दी रो हाथ कटारी लै
चलग्यो फिरणा रै सीनै मे,

सादूल और अरड़क दोन्यू
लड़ लड़ के थक थक हूया चूर,
दोन्यू ही झुलरी लिया आण
रण में थाका मदमत्त सूर।

इतणै में बिजली कड़क पडी
धस आग रूपी तलवार चली,
मादूल हूयो दो टूक शीश
जा पड्यो दूर, फौजा मचली,

लुट गयो सुहाग रण देवी रो
पण एक नहीं आसू ढलक्यो,
गमगमाट करतो मुख सुदर
ज्यू भोर हुई त्यू त्यू भलक्यो,

ले शीश गोद में चिता सजा
जा बैठी शिव हर हर करती,
बजि खग खोंचली हाथ बढा
चूचकारी बार बार धरती,

बोला-बाचल हो दान कर्यो
पति नै यो हाथ हाथ मे लै,
पण पिया जा बस्यो दूर दश
कै करल्यू हाथ साथ में लै,

सासू ड्योढी पर खडी खड़ी
मग जोती होसी आग लगा
मेरी मरवण घर री राणी
तू वेगी आजा पाव लगा,

ले हाथ सास रै घर तू जा
कह खग चलाई एक बार,
नान्हो सो गोरो हाथ दूर
जा पड़्यो खून री बही धार,

फिर लाल लाल आँख्या केरी
सैनिक नै बोली चला दग,
दे काट हाथ हूँ तो मेरो
मत देर करै क्यूं ज्यादो दग,

कह झट पट सीधो करयो हाथ
पण सेवक नटग्यो नवा माथ,
पुणि गरजी सैनिक काट हाथ
बस ज्ञग उठी झट गयो हाथ,

दग मग दग करती छूट पड़ी
लोही री तुर्री लाल लाल,
यो हाथ भेज गो बापू नै
कह ज्यो भाई री ल्यो सभाल,

फिर कट्यो सीस कानी दरूयो
चुदड़ी में ढकगी वरमाला,
धक् धक् लपटा में धधक उठी
भारत री बेटी रण बाला,

लोरी

दूधो किया पियाऊ ओ लाल ?
तन्नै किया जियाऊ ओ लाल ?

मैं कुणबै में बहू घणी थी
सासु सुगणी भली घणी थी,
पोस्यो, पोयो, पाणी ल्याती
मन न धापतो इतणो खाती,
दूधा न्हाती, पूता फलती
दही बिलोती, सुख में पलती,

आज न वे दिन मिलै उधार
सूख गई आंचल में धार,
अब सुख आगै बधगी पाल

दूधो किया पियाऊ ओ लाल ?
तन्नै किया जियाऊ ओ लाल ?

दूध कठै अब तन मे म्हारै
मरणो सूझै, जिवड़ो हारै,
अब तक आसा कदै न खोई
पेट बल्यो पण कदै न रोई ?

काजल, टीकी सदा लगाई
घुड़लो फेर्यो, पोष मनाई,

घरां पधार्‌या जद भरतार
सावण सो उमड्‌यो ले प्यार,
पण अब चूल्है चढ़ै न दाल
दूधो किया पियाऊं ओ लाल ?
तन्नै किया जियाऊं ओ लाल ?

भूख मरूँ आतड़िया धूजै
कोड़्या कापै पलरा सूजै,
आला और दिवाला जोऊँ
लाल बिलखतां मैं कद रोऊँ ?
हाड पड़ै, करणावै चीजै
आंचल में बस लोही सीजै,

हाय गरीबी तू मत हार
मिनखा री मत पाण उतार,
दाणा रो तो पड़ग्यो काल
दूधो किया पियाऊँ ओ लाल ?
तन्नै किया जियाऊँ ओ लाल ?

मैं जाणू पति कितो कमावै ?
दफ्तर में अपसर खावै,
भूखै रो माथो गरणावै
लिखता लिखता नस तरणावै,
पिंडली कापै, घर जद आवै
कड़ फड़ नली कड़कती जावै,

कदै न सीस उठै हे राम।
काम करै पण मिलै न दाम,
मच्यो अंधेरो बाका हाल
दूधो किया पियाऊँ ओ लाल?
तन्नै किया जियाऊँ ओ लाल?

आज भवर मत घरा पधारो
जोर नहीं मरती रो म्हारो,
मन्नै नहीं दुख, मैं तो जाऊँ
धरती ने चेतन कर, जाऊँ,
अब तो बिजली वेगी पड़सी
मिनखा रा वैरी सै बलसी

पौ फाटी, आयो परभात
दुखड़ा रीं तो कटगी रात,
थेई सम्हालो थारो लाल,
दूधो किया पियाऊँ ओ लाल?
तन्नै किया जियाऊँ ओ लाल?

मैं' लोईमें छप्पनभोग, जका, मनवार बिना फगता कोनी,
सोना रीथाल्या, नीलम रा बाजोट बिना धरता कोनी,
बै हाथ, जका करता पगल्या फूलां री कंवली सेजां पर,
बै आज रूलै भूखा तिसिया, हिंदवाणे सूरज रा टाबर,

श्री कन्हैयालाल सेठिया

परिचय—सुजानगढ़ [बीकानेर] री धरती माथै अेक व्यापारिक परिवार मे पैदा होण आलै इण कवि नै घर आला जठै दिन रात बही खाता रै जमाखर्च मे उलझियो राखणो चावै हा बठै इणनै उणमणो नै कविता बणावती टेम मुळकतो पायो। राजस्थान रा भाग मोटा समझणा चाइजै के ऐडो प्रतिभा आलो कवि अठै जलमियो।

श्री सेठिया री रचनावा मे बच्चन जैडी भावुकता, महादेवी जैडी कोमलता नै प्रसाद जैडी दार्शनिकता रो अपूर्व मेल देखवा मिलै है। हिन्दी जगत् मे 'मेरा युग' नै 'दीप किरण' जैडी सुन्दर पोथिया देण आलो ओ कवि राजस्थानी भाषा रो भी समर्थ कवि है।

भाषा रो प्रवाह नै ओज इणारी कवितावा मे विशेष रूप सू मौजूद रेवै है। श्री सेठिया कोरा कवि ही नहीं बल्कि राजस्थानी रा अेक मात्र गद्य काव्य लिखणिया भी है। इणा रै गद्य काव्या री पोथी "पाखड़ल्या' छपवा आली है।

पातल और पीथल

अरे, घास री रोटी ही जद बन बिलावड़ो ले भाग्यो,
नानो सो अमरयो चीख पड्यो, राणा रो सोयो दुख जाग्यो।

मैं लड़्यो घणो, मैं सह्यो घणो
मेवाड़ी मान बचावण नै
मैं पाछ नहीं राखी रण में
बैर्यां रो खून बहावण नै,

जद याद करूं हल्दी घाटी, नैणां में रगत उतर आवै,
सुख दुख रो साथी चेतकड़ो, सूती सी हूक जगा जावै,

पण आज बिलखतो देखूं हूं
जद राजकंवर नै रोटी नै,
तो क्षात्रधर्म नै भूलूं हूं,
भूलूं हिंदवाणी चोटी नै,

मैलां में छप्पन भोग जका, मनवार बिना करता कोनी,
सोना री थाल्यां नीलम रा, बाजोट बिना धरता कोनी।

ऐ हाय जका करता पगल्या
फूलां री कंवली सेजां पर,
बै आज रुलै भूखा तिसिया
हिंदवाणै सूरज रा टाबर।

आ सोच हुई दो टूक तड़क, राणा री भीम बजर छाती,
आंख्यां में आंसू भर बोल्या—मैं लिखस्यूं अकबर नै पाती,
पण लिखूं कियां जद देखै है आडावल ऊंचो हियो लियां
चितौड़ खड्यो है मगरां में, विकराल भूतसी लियां छियां

मैं झुकूं किया ? है आण मनै
कुल रा केसरिया बाना री,
मैं झुकूं किया ? हूँ शेष लपट
आजादी रा परवाना री,

पण फेर अमर री सुण सुणकर, राणा रो हिवड़ो भर आयो
मैं मानूं हूं दि म्लेच्छ तनै सम्राट, सनेसो भिजवायो,
राणा रो कागज बांच हुयो, अकबर रो सपनो सो साचो
पण नैण करया विसवास नहीं, जद बांच बांच नै फिर बांच्यो,

के आज हिमालो पिघल बह्यो
के आज हुयो सूरज शीतल,
के आज शेष रो सिर डोल्यो
आ सोच हुयो सम्राट विकल

बस दूत इसारो पा भाज्या, पीथल नै तुरत बुलावण नै,
किरणां रो पीथल आ पूग्यो, ओ साचो भरम मिटावण नै,

उण वीर बांकुड़े पीथल नै
रजपूती गौरव भारी हो,
बो क्षात्र धर्म रो नेमी हो
राणा रो प्रेम पुजारी हो,

बैर्‌यां रै मन रो कांटो हो, बीकाणो पूत खरारो हो,
राठौड़ रणां में रातो हो, बस सागी तेज दुधारो हो,
आ बात पातस्या जाणै हो
घावां पर लूण लगावण नै,
पीथल नै तुरत बुलायो हो
राणा री हार बचावण नै,

म्हे बांध लिया है, पीथल सुण, पिंजरै में जंगली सेर पकड़,
यो देख हाथ रो कागद है, तू देखां फिरसी कियां अकड़,
मर डूब चलू भर पाणी में
बस झूठा गाल बजावै हो,
पण टूट गयो बीं राणा रो
तू भाट बण्यो बिड़दावै हो।
मैं आज बादस्या धरती रो, मेवाड़ी पाग पगां में है,
अब बता मनै किण रजवट रै, रजपूती खून रगां में है।
जद पीथल कागद ले देखी
राणा री सागी सैनाणी,
नीचै स्यूं धरती खिसक गई
आंख्यां में आयो भर पाणी।
पण फेर कही तत्काल संभल, आ बात सफा ही झूठी है,
राणा री पाग सदा ऊँची, राणा री आण अटूटी है।
ज्यो हुकम हुवै तो लिख पूछूं
राणा नै कागद रै खातर,
लै पूछ भलांई पीथल तू
आ बात सही बोल्यो अकबर।

म्हे आज सुणी है नाहरियो
स्याळां रै सागै सोवैला,
म्हे आज सुणी है सूरजड़ो
बादल री ओटां खोवैला,
म्हे आज सुणी है चातगड़ो, धरती रो पाणी पीवैला,
म्हे आज सुणी है हाथीड़ो, कूकर री जूणां जीवैला।

म्हे आज सुणी है थका रातम
अब राड हुवेला रजपूती,
म्हे आज सुणी है म्याना में
तरवार रवैला अब सूती,
तो म्हारो हिवड़ो कांपे है, मूछ्या री मोड़ मरोड़ गई,
पीथल ने राणा लिख भेजो, आ बात कठै तक गिणा सही।

पीथल रा आखर पढता ही, राणा री आख्या लाल हुई,
धिक्कार मनै, हूँ कायर हूँ, नाहर री अेक दकाल हुई।
मैं भूख मरू, मैं प्यास मरू
मेवाड़ धरा आजाद रवै,
मैं घोर उजाड़ा में भटकू पण
मन में माँ री याद रवै,
मैं रजपूतण रा जायो हूँ, रजपूती करज चुकाऊँला,
ओ शीश पड़ै पण पाग नहीं, दिल्ली रो मान झुकाऊँला,

पीथल, के खिमता बादल री, जो रोकै सूर-उगाली नै
सिंघां री हाथल सह लेवै, बा कूंख मिली कद स्याली नै,
धरती रो पाणी पियै इसी, चातक री चूंच बणी कोनी,
कूकर की जूणा जिवै इसी, हाथी री बात सुणी कोनी।
आ हाथां में तरवार थकां
कुण राड कवै है रजपूती,
म्यानां रै बदलै बैर्यां रै
छीनां में रेवैला सूती,
मेवाड़ धधकतो अंगारो, आख्या में चमचम चमकैला,
कड़खै री उठती तानां पर, पग पग पर खांडो खड़कैला।

थलो थे मू कदूया अँठघेडी, लोदी री नदी बहादूंला,
मैं तुरक कहूँला अकबर ने, उजड़्या मेवाड़ बसादूंला।
जद राणा रो संदेश गयो
पीथल री छाती दूणी ही,
हिंदवाणो सूरज चमके हो
अकबर री दुनिया सूनी ही।

बापू

आभै में उड़ता रग थमग्या, गैले में बैता पग ठमग्या,
हाको सो फूट्यो धरती पर, ये कुण गमग्या ये कुण गमग्या!
ओ मिनख मरयाक मरग्या पाखी
ओ देव मरयोक मरयो साखी,
या सिर कूटै है हिंदवाणी
वा झुर झुर रोवै तुरकाणी,
इसड़ो कुण सजन सनेही हो, सगला रा हिवड़ा डगमगग्या,
ह्या जका कठै, बे किया बठै, पत्थर सा करड़ा बण थमग्या।
मिनखा रो रुखाग्यो मिनख पणा
देवा री मिटगी ठकराई,
बापूजी सुरग सिधार गया
दूणी रै आडी के भाई।
बीऊँना धो'र पच्चास बरस, बिसवास दिरा'र बियां ठगग्या,
गिणिमार पहैलो अब हेटो, सतधरमी बचना सू डिगग्या।

बापू रा मिनखा देही में
धरती पर मिनख नहीं आया,
आगे री पीढ्यां पूछैली
के इस्या नखतरी पण आया ?
इण एक जोत रे पलके सू इतिहास सदा ने जगमगग्या।
इण एक मौत रे मौके पर सगला रा आठ गल मिलग्या।

खेजड़लो

म्हारे मुरधर रो है साँचो सुख दुख साथी खेजड़लो
तिसाँ मरे पण छियाँ करे है करड़ी छाती खेजड़लो

आसोजाँ रा तप्या तावड़ा
काचा लोहा पिघलग्या,
पान फूल री बात कराँ के
बे तो कद रा जलबलग्या,
सूरज बोल्यो छियाँ न छाडूँ पण जबरो है खेजड़लो
सरणे आय'र छियाँ पड़ी है आप बले है खेजड़लो

सगला आवे कह कर जावे
मरू री खारो पाणी है,
पाणी कयाँ रो ओ तो आँसू
खेजड़ले री जाणी है,
आँसू पीकर जीणो सीख्यो ओक जगत में खेजड़लो
वे मिट जासी अमर रेवैलो ओक जगत में खेजड़लो

गाँव ग्राँतरे, नाग पड़ग्या
श्रीर सतावे भूख घणी,
गाडी ग्राली लाया हाँके
नारो, थांरो मरे घणी,
छिम्या पड़गी ताग निकल्या पण है सारो खेजड़लो
'ग्राज्या' दे लोगाँ रो भालो बोल्यो प्यारो खेजड़लो

जेठ माह में घरता धोली
दूध पानड़ो मिले नहीं
भूखा मरता ऊँट फिरे है
श्रे लखलीफा मिले नहीं,
इण मौके भी उण ऊँठा ने डाल चरावे खेजड़लो
श्रंग श्रंग में पीड़ भरी पण पट मगावे खेजड़लो

आधी आ अजब अनूठी है डूगर उड़ग्या सिल उडी नहीं
सिमरथ वे ढह्ग्या रंगमहल हलकी झूपड़िया उड़ी नहीं
उड़ गयो नवलखो हार देख मिणिया री माला पडी अठै
उड़ गई चूड़िया सोनै री लाखा रो चुडलो उडै कठै
उड़ गया चीर वे झुलमुल रा खादी रै खरप नहीं लागी
उड़ गयो रेशमी गदरा पण राली रै रज नहीं लागी

रेंवतदान चारण "कल्पित"

[परिचय—मथाणियां (मारवाड़) रै मांय जलम लेण आलो ओ कवि एक दिन राजस्थानी कविता नै नई दिशा देण आलो कवि बण जावैला, आ कुण जाणै हो ? जूनै चारण साहित्य में जकी फड़क ही वा सागी फड़क थी कल्पित जी री कवितावां में देखण मिलै है। इण री कवितावां में भूत काल री भाषा, वर्तमान री समस्यावां नै भविष्य निर्माण री मधुर भावनावां री छूट। पलपलाट करै है।

जदी मुकुनजी री कवितावां में मधुरता नै सेठियाजी री कवितावां में गभीरता है तो इण री कवितावां में पाञ्चजन्य रो उद्घोष है। कल्पना रो सहारो लेता थका भी कवि वास्तविकता री धरती सूं उड़ कर ऊल जलूल को बकियोनी। सामयिक भावनावां नै सधन नै समथ भाषा में गेड़ी जदी है के वे सुणवा नै पढवा आला नै चोत ही सोचणी लागैला। आ निश्चित रूप सूं कही जा सकै है के राज थानी कविता मे क्रांति लाणै आलो ओ कवि जन्मजात कवि जाति रो प्रतिनिधि बण कर ज्यां री काव्य-परंपरा नै अनुसरण राखैला]

इनकिलाब री आंधी

अघार घोर आधी प्रचंड वा धुआधोर धम धम करती
आवै है उर में आग लिया गढ़ कोटा बंगला नै दहती
बेताल् बतूल्यो नाचै है जिण रै आगे सदेश लिया
राती नै कलीपीली आ कुण जाणै कितरा भेष किया

वे शख बजे सरणाटा रा काई गीत मरण रा गावै है
डकै री चोट करै भोना बायरियो ढोल बजावै है
विकराल् भवानी रमै भूम धरती सू अम्बर तक चढ़ती
अघार घोर आधी प्रचड *

नींवां रै आगे दबियोड़ी जुग-जुग री माटी दे झपटो
'हे उडी किलां नै जड़ामूल् पसवाड़ो फेर लियो पलटो
तिनके ज्यू उडगी तलवारा घोचै रो रूप कियो भाला
रू खां रै पत्ताँ ज्यू उडगी वे लाज बचावण री ढालां

घा पड़ी उकरड़ी में बोतल मद पीवण रा प्याला उड़ग्या
मैफिल रा उड़ग्या ठाट बाट ओढण रा शाल दुशाला उड़ग्या
वे देख जुगा रा सिंहासण रड़बड़ता पड़िया ठोकर में
वे देख हजारा मुकट आज उड़तोड़ा दीखे अम्बर में
वे ऊधा लटके अधर बच नहीं भेलै अंबर नै धरती
अघार घोर आधी प्रचंड **

आधी आ अजब अनूठी है डू गर उडग्या सिल उडी नहीं
सिमरथ वे ढहग्या रगमहल दलकी झू पड़िया उडी नहीं
उड गयो नवलख्यो हार देख मिणिया री माला पड़ी अठै
उड गई चूड़यां सोनै री लाखां रो चुड़लो उडे कठै

मलणोत्रो

उड़ गया चीर वे मुलमुल रा लादी रै संत नहीं लागो
उड़ गया रेशमी गदरा पण खलो रै ‹ब नहीं लागो
आ फिरे जाटणी लड़ालूम ललरतणी मरगी लड़थड़ती
अंधार घोर आंधी प्रचंड

अंधकार मत जाण म्हारला इनकिलाब री छाया है
इण भाग बदलिया लाखां रा केइ राजा रंक बणाया है
रे आ वा काली रात जका पूनम रो चाँद हंसावे है
रे आ वा काल। मौत जका मुगति रो पथ बतावे है

रे आ वा भोली हंसी जका के मरती वेला आवे है
रे आ नागण काल। जहर जको डाढा में इमरत लावे है
इण धु आधार रै आँचल में इक जोत जगे है जगमगती
अंधार घोर आंधी प्रचंड

सांसो

बिखेरा आंख में आंसू हिये में पीड़ संचारी
बिलखणो रोवणा खतम हुई है आज माता री
भटकती, चूमती, फिरती मुसीबत पार कीनी ही
उमर में हाय पहली बार ठंडी सास लीनी ही

दियो हो खून बेटा रो कियो हो कालजो ठंडो
हजारां लाश रै ऊपर लगायो जीत रो झंडो,
पड़ी स्वाधीनता भूखो पलटगी थारा हिवड़ा री
हुवा दी हूक ऐकां के न लागे मिनख ए कारी
हिये में पीड़ संचारी

महादेव

धरां सू सुरग रै रस्तै हिवालै ले गयो गांधी,
कदम हा च्यार बाकी के उठी तूफान री आंधी,
धमीड़ा तीन बाज्या हा सनासन गोलियां छूटी,
उठी नै देह बा छूटी अठी नै डागड़ी टूटी,

न धपी क्रोध सूं धरती न पड़ियो टूट नै अम्बर,
धरा पर रह गया बैठा रही मैं डूंगरा ऊपर,
कड़क नै बिजली पड़गी हा भड़कगी आग चिणगारी,
हिये में पीड़ संचारी

समझ नै फूल सूं कंवलो नता क्यूं कालजो लीनो ?
समझ क्यूं जोत जगमगती नैण रो चानणो लीनो,
मरम में मिनख भगवन बता क्यूं देवता लीनो,

सजावण स्वर्ग री शोभा कियो क्यूं हिन्द रो घाटो,
नहीं है कालजो थारै हिये री ठौड़ है भाटो,
जणै ही छोड़नै लाखां गयो लै एक अवतारी,
हिये में पीड़ संचारी

हुता जे फूल री मन में कमल नै तोड़ लेणो हो,
हुती जे रूप री मन में पूनम रो चांद लेणो हो,
हुती जे जोत री मन में सूरज नै मांग लेणो हो,
हुती जे मिनख री मन में तो कोई भूप लेणो हो,

अरे इण एक रै बदलै हजारां दान दे देती,
अगर जे एक रह जातो हिया री पीड़ सह लेती,
परीक्षा लेय नै भगवन अजे तूं देख लै म्हारी,
हिये में पीड़ संचारी,

उड़ गया चोर वे मुलमुल रा खादी रै दाग नहीं लागो
उड़ गया रेशमी गद्दा पद्म राली रै रज नहीं लागो
आ फिरै आटयो लड़ालूम ललरतणी मरगी लड़थड़ती
अंधार घोर आंधी प्रचंड

अंधकार मत जाण मारला इनकिलाब री छाया है
इण भाग बदलिया लाखां रा केई राजा रंक बणाया है
रे आ वा काली रात जका पूनम रो चांद हंसावै है
रे आ वा काल। मौत जका मुगति रो पथ बतावै है

रे आ वा भोली हंसी जका के मरतो बेला आवै है
रे आ नागण काल। जहर जकी डाढ़ा में इमरत लावै है
इण धुआधोर रै आँचल में इक जोत जगै है जगमगती
अंधार घोर आंधी प्रचंड

सांसो

बिखेरा आंख में आंसू हिये में पाड़ मचारी
बिलखणी रोवणा सूरत हुई है आज माता री
भटकती, चूमती, फिरती मुसीबत पार कीनी ही
उमर में हाय पहली बार ठंडो सांस लीनी ही

दियो हो खून बेटा रो कियो हो कालजो ठंडो
हजारां लाश रै ऊपर लगायो जीत रो झंडो
पड़ी स्वाधीनता मूंधी पलटगी आश हिवड़ा री
हुई दो टूक ऐडा के न लागे मिनख रा कारी
हिये में पीड़ ईचारी

मङ्गहंस

धरा सूं सुरग रै रस्ते हिवालै ले गयो गांधी,
कदम हा च्यार बाकी के उठी तूफान री आंधी,
धमीड़ा तीन बाजरा हा सनाधन गोलिया छूटी,
उठी नै देह बा छूटी अठी नै डागड़ी टूटी,

न धपी क्रोध सूं धरती न पड़ियो टूट नै अंबर,
धरा पर रह गया बैठा रही मैं डूंगरा ऊपर,
फड़क नै बिजली पड़गी हा भड़कगी आग चिणगारी,
हिये में पीड़ सचारी

समझ नै फूल सूं कंवलो बता क्यूं कालजो लीनो?
समझ क्यूं जोत जगमगती नैण रो चानणो लीनो,
मरम मैं मिनख भगवन बता क्यूं देवता छीनो,

सजावण स्वर्ग री शोभा कियो क्यूं हिन्द रो घाटो,
नहीं है कालजो थारे हिये री ठौड़ है भाटो,
जणै ही छोड़नै लाखा गयो ले एक अवतारी।
हिये में पीड़सचारी

हुती जे फूल री मन में कमल नै तोड़ लेणो हो,
हुती जे रूप री मन में पूनम रो चांद लेणो हो,
हुती जे जोत री मन में सूरज नै माग लेणो हो,
हुती जे मिनख री मन में तो कोई भूप लेणो हो,

अरे इण एक रै बदलै हजारां दान दे देती,
अगर जे एक रह जातो हिया री पीड़ सह लेती,
परीक्षा लेय नै भगवन अजे तू देख ले म्हारी,
हिये में पीड़ सचारी,

महालिछमी

घेन्या रा नीर गाँवां रा माँगां रा दियो बुझाती आ
गुदड़ी रा एक अगन दे ए लिछमी दीप बुझाती आ
हस दीन्यो, सींदा ताती नू तिन रै कर काना दीन्यो हो
ऊ जे बस रलते तामड़िये बल पगा ऊभा दीन्यो हो

भूख बजे किरता दुख भेळा मर मर नै जीनी रलगली
काय गुड़ा में दिन काट्या फूला ज्यू जिंदगी नै पाली
पग पग टप रहगी गड़ थारा नगचली छिण में छोड़ साथ
अद पूछूं तो कारण न पण रो हस माथ फेरण एक लात
अपमरिया प्राण मती तड़पा धूली पर सेज चढाती आ
ए लिछमी दीप बुझाती आ

जे घड़ी विधाता रूपाळी सिणगार दियो है मजबूर
रलड़ी, बाजूबंद, तिमणियो गलहार दियो है मजबूर
कोठी में बोटी बाट बाट जिण मद्दो हाथ लगाई ही
फूलां ज्यूं फरला डाबरिया चरणां म भेंट चढाई ही

घर की बहू बेन्यां बिलखी री पण लिछमी तनै सजाई ही
इक थारी जोत जगावण नै घर घर री जोत बुझाई ही
पण ऐन दिवली रै दिन देख्यां सामी छाती पग धरती
ठुमकै सूं चढी हवेली में मन मरजी रा मटका करती
जे लाज बेचणी तेवड़ली तो पूरो मोल चुकाती आ
ए लिछमी दीप बुझाती आ,

इतरा दिन ठगती रैई है तू भोली पण छल जाती ही
खाती ही खाटा माटी री पण गीत हीरां रा गाती ही

जे हमै जाण रो नांव लियो तो जीभ डाम दी काढेला
जे निजर उठी महलां कानी तो आख फोड़ दी बाघेला
जे हाथ उठायो हाके नै नागोरी गेयो जड़ दालो
जे पग धर दीना धनिक्ष घर तो पगां पागली कर दाला
महलां' गढ़ कोटा, बगला रा वे सपना हमै भुलाती जा
ए लिछमी दीप बुझाती जा,

रे उठो मजूरा, किरसाणा थे ऊँडा धमन्यो आज जीण,
आ नफाखोर अन्याया नै करलो फोटी रा तीन तीन;
फण किचर कालियै माथा रो तू नाग मिटानै जैर भाग,
छाती पर पैणा पड्या नाग रे धोरा आला देस जाग,

स्व

परिचय—श्री मनुज देपावत इसो ठासवद कलाकार हो जको कविताया लिखतो गयो पण कदेई वानै छापै मे छपाणै री मनसा को राखीनी। इणरी कविताया मे स्वाभाविकता, शस्त नगाडा री गडगडाहट नै समाजवाद रो सुर है।

देशनोक (बीकानेर) रै एक मधम चारण परिवार में जलम लेण आलो ओ कवि जद ताई जियो तूफाना सू थापा मुक्की करतो जियो। जिन्दगानी सू नित नवा सबक सीख सीख'र ओ जकी जकी कविताया लिखी वे राजस्थानी भाषा री मोरा बणगी। कविताया सुणणिया आ ही कैता के इणरे कठा मैं तो सुरसतीजी विराजमान है।

मनुज खाली राजस्थानी भाषा रो ही नहीं हिन्दी रो भी चोखो कवि हो। राजस्थानी अ'र हिन्दी दोनू भाषावा नै मनुज सू मोकली आशाया ही पण ता १८ मई ५० का बीकानेर-पलाना रै बीच हुई रेला री भिडन्त मे इण रो देहावसान होग्यो जिक सू आशावा अधूरी ही रेगी काश मनुज और जींवतो।

रे उठो मजूरा, किरसाणा थे ऊँडा धमल्यो आज जीण,
आ नफाखोर अन्याया नै करदो कोटी रा तीन तीन,
फण किचर कालिय सापा रो तू आज मिटादै जैर भाग,
छाती पर पैणा पड्या नाग रे धोरा आला देश जाग,

स्व० श्री मनुज देपावत

परिचय—श्री मनुज देपावत इसो ठामचद कलाकार हो जको कविताबा लिखतो गयो पण कदेई जानैं छापै मे छपाणै री मनसा को राखीनी। इणरी कविताबा मे स्वाभाविकता, शरत नगाडा री गडगडाहट नै समाजवाद रो सुर है।

देशनोक (बीकानेर) रै एक मधम चारठ परिवार में जलम लेण आलो ओ कवि जद ताई जियो तूफाना सू थापा मुकी करतो जियो। जिन्दगानी सू नित नवा सबक सीख सीख'र ओ जकी जकी कविताबा लिखी वे राजस्थानी भाषा री मोरा बणगी। कविताबा सुणणिया आ ही केंता के इणरे कठा में तो सुरसतीजी विराजमान है।

मनुज खाली राजस्थानी भाषा रो ही नहीं हिंदी रो भी चोखो कवि हो। राजस्थानी अ'र हिंदी दोनू भाषावा नै मनुज सू मोकली आशाया ही पण ता १८ मई ५९ का बीकानेर-पलाना रै बीच हुई रेला री भिडंत मे इण रो देहावसान होग्यो जिण सू आशावा अधूरी ही रेगी काश मनुज और जींवतो।

रे धोरां आला देश जाग

उठ खोल उनींदी आंखड़ल्यां, नैणां री मीठी नींद तोड़,
रे रात नहीं अब दिन ऊगियो, सुपना रो झूठो मोह छोड़,
थारी आंख्यां में राच रह्या, जंजाल सुहाणी रातां रा,
तू कोट बणावै उण जूनोड़ै जुग री बोदी बातां रा,
पण बीत गयो सो गया बीत, अब उणरी मूंडी आस त्याग,
छाती पर पैणा पड्या नाग, रे धोरां आला देश जाग।

रे देख मिनख मुरझाय रह्या मरणै सूं मुश्किल है जीणो,
अै खड़ी हवेल्यां आज हंसै पण झूंपड़िया रो दुख दूणो,
अै धनवाला थारी काया रा भक्षक बणता जावै है,
रे जाग खेत रा रखवाला आ बाड़ खेत नै खावै है,
ए जका उजाड़ै झूंपड़िया नै उण महलां रै लगा आग,
छाती पर पैणा पड्या नाग, रे धोरां आला देश जाग।

खाग रै लागी आज काट खूंटी पर टंगिया धनुष तीर,
वे लोग मरै भूखा मरता फोगां में रुलता फिरै वीर,
रे उठो, मजूरां, किरसाणां ये ऊठा कसल्या आज जीण,
आं नफाखोर अन्यायां नै करल्या काडी रा तीन तीन,
पण किचर कालियै सापां रो त आज मिटादै ऊैर भाग,
छाती पर पैणा पड्या नाग, रे धोरां आला देश जाग।

रे इनकिलाब रा अंगारा सिलगावै दिल रा दुखी हाय,
पण छाया छिड़का नहीं बुझैली डूंगर लागी आज लाय,
अब दिन आवैला इक इसो धोरां री धरती धूजैला,
अै सदा पत्थरां रा सेवक अब आज मिनख नै पूजैला,
इण सदा सुगै मरुधर रा, सूतोड़ा जागै आज भाग,
छाती पर पैणा पड्या नाग, रे धोरां आला देश जाग।

जद झुकै शीश

उण कायर कीट कपूता री कवि कथा सुणावण ने चावे,
अम्बर री आख्या लाज मरे, धरती लजखाणी पड जावे,
जद झुकै सीस नीचा ह्वै नैण
धरती रो कण कण सरमावे।
भेरी रो रण में नाद हुवे, मतवाला खागा खणकावे,
मा वसुधरा हित जग छिडै वीरां रो जोश उफण आवे,
अतर री ज्वाला जाग उठै, रग रग में बिजली दौड पडे,
झनझना उठे मनरी वाणा, अर आख्या सू अगार झडे,
पण हाट मौत रा मही देख मतवाला मन में घबरावे,
जीवण रा चिता आन पडै प्राणा रो मोह नहीं जावे,
वे प्राण जका नित महला में मल्हारा रा गायन गावे
वे प्राण, जका हो सुरामस्त, परिया रा आलिगण पावे,
वे प्राण, जका राजा बणकर रैयत रे टुकडा पर जीवै,
वे मुफतखोर कायर जग म मरणे रा स्वाद नहीं जाणै,
माता री लुटती लाज देख, प्राणा म जोश नहीं आवे,
रग रग में ताप नहीं आवे,
सिघा री झपटा झेलणिया, मिनकी रे डोला डर जावे
जद झुकै शीश नीचा ह्वै नैण
धरती रो कण कण सरमावे,
वे राज भवन, रस भोग भवन वैभव विलास म चूर खड्या,
ज्यू मानवता री छाती पर दानव रा निठुर पैर अड्या,
महला में बैठा मौज करै वो राज काज रो रखवारो,
जीवण रा भार लिया ढोवे गलिया म रोवे दुखियारो,
रोटी री माग करै जग म, छाती पर सहन करे गोली,

ऊंचे महला री छाया म, वा भूखा री दुनिया मोली,
ले फौज पुलिस रा बाजीगर, ले साधन मोटर ट्राम रेल,
आ सड़का री फुटपाथा पर, कर रयो निभाता एक खेल,
वो खेल जके में मानवता कठपुतली बण कर नाच उठै,
म हाड मास रा बण्या पिंड, लक्कड़ी रा घाडा बण जावै,
सहकर हंटर री मार मिनख मुस्कान बिखेरत्या अड्या रहै,
सहकर लूटै पर लड्या रहै, पथ पर पत्थर ज्यूं पड्या रहै,
बहना री इज्जत लूट दनुज नित अट्टहास करता जावै,
जद झुकै सीस, नीचा है नैण
धरती रो कण कण सरमावै,

वे पिसा व्यवस्था रा प्रेमी, वे शासक सत्ता रा हामी,
वे लम्बा तिलक लगावणिया, ये काती रा कुत्ता कामी
सोनै, चादी रै टुकड़ा पर मानव इज्जत रा मोल करे
बिक जाय जवानी हाट हाट तन रा तावै सूं तोल करे
बिक जाय मानवी बिना मोल, हाठा पर लाली दाग लिया,
ज्यूं मरी सभ्यता रै मुख पर औं लाल मौत रा भाग लिया,
मन बिक जावै, तन बिक जावै, जीवण रा सौरभ लुट जावै,
पण उण मर भुक्खै मानव री, वा भूख नहीं बुझणै पावै,
जद झुकै सीस, नीचा है नैण
धरती रो कण कण सरमावै,

वे एक गाव रा ठाकरसा घोडां रै घास मगाता हा
आनो, दो आना देता पण ऊपर सू रौब जमाता हा
घोडा रै दाणों ग्वाळणै वा दाल चिणा री भिजियोडी
पण इण रा बानर भूखा हा, वा किस्मत इण सू खिजियोड़ी
कुत्ती रा हुचरिया नैठा, जीमै कचरा री थाली मे
पण एक मिनख ,रा टाबरिया भूखा सूता दीवाली म

श्री प्रेमचन्द रावल "निरंकुश"

परिचय— सरकारी इसपताल में लिखियोड़ा नुसखा रै साथै बीमारां नै दवाया देण आलो ओ कवि सागै सागै मन री दवाई भी दवैला आ कुण जाणै हो ? पण गरीबां साथै होण आला जुलमा नै जद ओ आपरी आख्यां सूं परतख देखिया तो भलै धोलो बालो किया बठो रैतो ?

राजस्थानी भाषा रो जको रेलो चालियो हिन्दी रो ओ कवि उण मे बह्या बिना को रै सकियो नी अ'र फटाफट कविताबा लिखणी सरु करी। भाषा रो जको रूप कल्पित जी अ'र स्वर्गीय मनुज जी री कवितावा मे है सागी बिसो ही उठाव आ री कवितावा मे है।

श्री निरकुश नागौर का श्री जगन्नाथ जी रावल रै घर मे सवत् १९७४ की वसत पचमी नै जलमिया नै उचित शिक्षा लेय कर १३ साल पेली ही नौकरी कर ली। श्री निरकुश जी री कवितावा विकास रो मारग बता रयी है।

मजूरण--री--भोलावण

आथूणे खेता में छोरी मैं फड़ब फाटवा जाऊँली
बाबलियो आवे तो वेजे दिन आथ्या पूठे आऊँली
तू वेजरड़ा रा दाणा ले कूँडल में बायर कूटयाजे
तू राब सीचड़ो हांडी में आ छाछ रामड़ी तो ल्याजे

टाबरिया जागे रोवेला तू बासी रोटया लेलीजे
दो कांदा छींके पर पड़िया तू बाट बाट कर देवाजे
हाँ ! आज देनगी देदी तो रेजी टुकड़ो मगवाऊँली
नागा टाबरिया रे सारू अगरखा चार सिवाऊँली
आथूणे खेता में छोरी

दिन चार किया मैं काढ्या हूँ आणे म्हारो अंतरजामी
एड़ा ही बोरा जी मिलिया एड़ा ही मिलग्या आसामी
वे एक बार रुपिया दीया आखी उम्मर रा बेगारी
ओ भोलो सारू रो आया मैं तो समझा समझा हारी

तत्तो, मम्मो आणे कोनी कोई भी आ धमका जावे
गेली गाडर ज्यू ओ चमके कोइ भी हाथ बता जावे
खेता सू मीठा डोकलिया थाणे चूसण ने लाऊँली
पण तू भातो वेगी ल्याजे नहीं तर भूखा मरजाऊँली
आथूणे खेता में छोरी

पाड़ोसण राधे साग वाग टाबरिया सारू लेलीजे
तू पोटा ने मोड़ी जाज्ये आगे जितरे घर में रीज्ये
बोरां रे चूची लागणदे मत बोर चुगणने रेजाजे
पण सिणिया रो भारो वेटा पाछी आंती लेती आजे

सिझ्या रा थाई रायाला मैं पाछी आ बतलाऊँली
फावड़ में फाचरिया मिलग्या तो तोड़ साग रा लाऊँली
आधूणे खेता में छोरी म्हैं फड़ब पाटवा जाऊँली

घासियारी

उठ तड़कै घड़ी अंधेरै में जद दुनिया सूती ही सारी
वा एक घास रा भारा नै, वापड़ में जातो घसियारी ।

ओ धणी राग सू रू दयाड़ो- माचलियै सूता खावणियों
जिण रै ऊपर आभो नीचै धरती ही साल सम्हालणियां
जिण रै छोटा छै टाबरिया, जिणगे धावड़ियो फाट्योड़ो
सुरटा फाटाँ सू बींध्योड़ा, ऊँदग्याँ फुट फुट वाट्योड़ो

जिण रै धन माया पोटा री, सौ बीस सूगती थेपड़िया
जिण रै राली रा चींतरिया, करता अपनी पूरी घड़िया
इस्याही मूजड़ली माथै- पड़ रैता सूखा लोथड़ला
जिण रै आछड़ा साथीड़ा- खाता रैता दुख गोतड़ला
आ घास फूस नै वेच पट में भार नाखती दुखियारी- उठ

दो पोर रात लक जाग जाग टाबरिया नै कहती काणी
वे एक सहर म रैता हा मेलाँ में राजा ओ राणी
सुणती सुणती हुँकारो जद उण टाबरिया रो खो जातो
तो एक मुसाणा रो ढाँचो ओ रूपो पल में हो जातो

ढलती फिरत्यां नै देख देख बद कूकड़लो बांगा देतो
सूता री नींद उड़ावण नै कुकड़ू कूँ रो लायो लेतो
तो उठ माटी रा दिवला नै आ तुली दिखाती जोरण नै
घट्टी में आटो पीसण नै, दो चार सोगरा पोवण नै
डोरी, दतेलो हेर फेर जावण री करतो तैयारी— उठ

भिर मिर बरसै मेह मावठियो, बारैं डाफर ठंडी बाजे
ओ इन्द्र धड़कै ठेर ठेर रीसां बलतो गूँजै गाजे
फाट्योड़ी झोली में बाध्यो, कम्मर रै छोटो दालरियो
दो कांदा ले सूगी मिरचा- वो एक रात रो सोगरियो

कांकड़ में खेजड़ली नीचै हिवड़ै री कंवली कोर टॉग
वा बेगी बेगी घास काट, रूखाँ री डाल्याँ काट छाँग
फिर बैठ कैर री ओट पछै, वा टाबर नै बोबो देती
वा खोल पोटली भाता री- बेगी बेगी ङ्चा लेती
रे सेर कणूका रै खातर, वा मरती खपती बेचारी—उठ

वे एक गाँव रा ठाकरसा घोड़ाँ रै घास मगाता हा
आनो, दो आना देता पण ऊपर सू रोब जमाता हा
घोड़ाँ नैं न्हाणो खावण नै वा दाल चिणा री भिनियोड़ी
पण इणरा टाबर भूखा हा, वा किसमत इण सू खिजियोड़ी

कुत्ती रा कुचरिया बेठा, खीमै कचरा री थाली में
पण एक मिनख रा टाबरिया भूखा सूता दीवाली में
छानै छानै चोर्यो टाबरों घोड़ा मुंडा सू छुटियोड़ो
हा दाल पाव भर पर भेड़ी, घोड़ा रो कुठण उठियोड़ो
था माग सपायो भूखाँ रो- वा गई लेया दूजी मारी
उठ तड़कै पड़ी अंधेरै में

उठ कठ भणनो ले सीग कमाई थारी थारै बच जावै
तू कात रैंटियो कपडो करलै, पैसो घर मे बच पावै
कर गाव गावरी जाव २ री एकठ फेर सभल जा तू
यू जाट, कुम्हार, चमार, सभी भाई रो भाई बणजा तू
मेवाडरा न री पचायत परजामडल मे आजा तू
यो दुख होवेगो दूर, बणैगो अपणै घर रो राजा तू

श्री माणक्यलाल वर्मा

परिचय—राजस्थान तो कांई आखै हिन्दुस्तान मे ही इसो कोई मिनख कोनी लादे जको वर्माजी रो नाव नहीं जाणतो हुवे। क्यू के औ' छोटै राजस्थान रा प्रधान मन्त्री राजस्थान रा प्रातपति रै चुकिया है। इण टेम आप अ भा कांग्रेस कार्य समिति रा सदस्य है। इण तरिया आ सही है के औ' राजनीति रै खेतर मैं ही काम करता रया है पण साहित्य सू भी इणा रो मोकलो लगाव रयो है।

जिण टेम, मेवाड मे प्रजा मडल री थापना कर गाव २ मे उण रै प्रचार करणै री जरूरत पड़ी उण टेम वर्माजी नै कवि बणणो पड़ियो। इणा री कवितारा मे जनता नै जगावण री नै एको राखणै री सीख है। भाषा सरल होता थका भी नीरस कोयनी। सरसता नै भावुकता रै मेल सू कविता बोत चोखी लागै।

श्री बृजलालजी बियाणी री तरिया काश वर्माजी राजनीति रै सागै आपरै साहित्यिक स्वरूप नै भी जींवतो राखता तो कितरो चोखो हुतो ।

किसान

उठावै दुख अतरो क्यूं करसाण
बळी जेठ की ज्वाला में तू कद लेवाने पाळै देह ।
काली अंधियारी रातों में, कई लेवाने झेले मेह ।
जंगल भीतर पाल झूंपड़ी जोगो बण कर क्यूं जागे !
फाट्यो कथल्यो डाल पीठ पर तापे क्यूं धूणा आगे,
हा हा हू हू करे मदद पर कोई न थारे आवे है,
थारा मूंडा आगे थारी मेनत लूट्या जावे है,

रूंडा, सूर, सियाळ सू सल्या,
काई नी मानै थारी काण
उठावै दुख अतरो क्यूं करसाण,

हाथ्यो मक्खी रातां, छाछियो, खोदे फिर पायो जावे,
बारा महीना पचे भाड़ में तो भी गुड़ हाथ न आवे,
रोज उमळतो, गळतो, बळतो रोळी, सीळी, लागी लार,
मण दो मण ज्यूं पके घूघरी राध'र खावे पड़े न पार,
जतरी मकी उधार लायो 'साचा थारू' जुड़ी नहीं,
हांसल बीज चढ्या ही जावे रीत रिवाज रुकी नहीं,

रिश्वत, लूट, फूट, दुसमण री
था पर तणी कमान
उठावै दुख अतरो क्यूं करसाण,

दैंटो लावे, फटी धोवती चली अंगरखी मारा थू,
घरवाली जद जाय ब्याव में मांग घाघरो ओरां थू,
करे भैंस की घणी चाकरी तो भी पी न सके तू छाछ,
होवे भायण घर घर भटके चीज मिले नहीं बिगड़े ताछ,

किसान

एक लूगड़ा साटे पाछी काढी बासठ री बाकी,
छोरां ने गुजराती होग्यो, मिले न अजमा री फाकी,

नटगी ममीं, सरग तक बदल्यो
मिटगी जाण पिछाण,
उठावे दुख अतरो क्यू करसाण,

वे कुरसी पर तू जुत्या में वे गादी पर तू धूला साथ,
तू धरती झुके सलाम करे पण वे नहीं जरा उठावे हाथ,
थारा सोभ्रा पर मौज उडे, थारा रोभ्रा पर है रंग राग,
पल भर तू हंसले तो धधके सलगे दवानल री सी आग,
थारा बच्चा ने रात्र नहा बे-रोज उड़ावे है पकवान,
घर टूट बंलाडा दूणा होग्या बठी महल है आलीशान,

नागर न मार उठावे, गधा पर
लाद लाग पिलाण,
उठावे दुख अतरो क्यू करसान

उठ भठ भणबो ले सीख, कमाई थारी थारै बच जावे
तू कात रेंटियो कपड़ो करले, पैसो घर में बच पावे,
कर गाव गाव री जात जात री एकठ फेर संभल जा तू
यू जाट, कुम्हार, चमार सभी भाई रो भाई बणजा तू,
मेवाड़राज री पचायत धरना मडल में आबा तू,
यो दुख होवेगो दूर, बणेगो अपणे घर रो राजा तू

डरे कदी मत, दबे कदी मत
राख डील में प्राण,
उठावे दुख अतरो क्यू करसाण,

देशालीस

बाप नै बेटो छलै है, रूख कांटा रा फलै है,
आज दुसमण है गढो मे, घर-दिया सू घर बलै है,
शूरता गम मे गलै है, पच मारग सू टलै है,
राज बल री घट चढ़ी मे, पाप रा पूला पलै है,

श्री गणेशलाल व्यास "उस्ताद"

[परिचय—जिण टेम मारवाड़ में सूती गया बेती ही उस्ताद नै उणटेम भी चेतो हो अर न खाली खुद नै ही चेतो हो मुलक रा मोट्यारा नै चेतावण मे भी घो धरकत कर दी ही 'मुलक नै मोट्यारा माथा देणा पड़सी' मारवाड़ री गली गली गूंज उठी ।

उस्ताद परायै तापड़ माथै रम्मत घालणियै मिनखा माय सू कोयनी आपरो घर फूंक तमास्मा देखणियो मरद है । जकै आजादी री लड़ाई मे जेला गयो नै बरबाद हुयो पण आज आजादी रा सुख भोगता में भायला सूं लारै रैर भी लिलाड़ मे सल को घालियोनी इमै मिनख रा अनुभव कित्ता करड़ा-कवला हुवै है जकै रो आपा अणमान लगा सका हा ?

उस्ताद दिवलै री तरिया खुद बलियो पण कमतरिया-करसा नै चानणो दियो है । राजस्थान रो ओ लोक गीतकार जको जलजलो लाणो चावै हो आज उण रो रूप देखर बसक्या फाटै है । काश आज उस्ताद फेरू थी सागी काम मे आपरो जीवण होमतो ? पण कवि री मजबूरी है कै उण री प्रतिभा अर सगति नै राजस्थान सरकार रै पब्लिसिटी विभाग री भींता लील रयी है । आज भी उस्ताद रै हिवड़ै में समन्दर सा हबोला आवै है । बो कमतरिया नै करसा सारू काम करणै ताई उम्मीन रयो है पण कर को सकैनी ? क्यू ? इण रो उत्तर उस्ताद रै आसरा मे समाज रै अकल रो दिवालो है ।

उस्ताद माथै आज भी राजस्थानी गीत साहित नै गरूर है नै आगै भी बरावर रैवैला ।]

वीती वात हजूरां री

आ कमतरियां रा हाथ हेम सू जड़िया
जद ऐ क्यूं भूखा मरिया !
कविराजा ! इण रो म्यानो दो
ठाकुरजी ! ऐ हरजानो दो

ऐ भरी कमाई ल्यावै
धरती रा धण निपजावै
क्यूं जग माथै रा मोड़ पगां में पड़िया !
कुण देग्यो रूप उजड़िया
ठाकरसा ! इण रो उत्तर दो
सेठजी ! आप पढ़ तर [illegible]

जो हाली हल हड़कावे
धावरण सू धूड़ [illegible]
आ पाणी म ठंड लाग गीगला मरगी
गीगा री सुरनी जद्गी
घर धीवण ने काया काना
पण पेरण [illegible] पाछो घोती

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

म्हाराज टीपणो लाया
मै माता सू मिल आया
क्यू कमतरिया रा करम वाचता अटकै
ने माल मुफत में गटकै
औ निपट राम रे नेडा है
अणपढ जजमान, गवेड़ा है
औ छापा तिलक लगावै
मै खोटा करम कमावै

औ करम कपाली ठोक फरे सतोकी
औ वैंती गाडी रोकी
धकियोड़ो पाणी सड़ै परो
अणखड़ियो नारो अड़ै परो

कविराजा ! औ रजवाड़ो
इंदर रो घणो अखाड़ो
औ मेल मालिया मोटर घोड़ा घोड़ी
करसा री कम्मर तोड़ी
मेला में मारू सूता है
धरती रा बोझ अणू ता है
औ खेत आध में बाटे
ने लाग सवाई लाटे

औ दूध दही घी साग खोस ले सारो
करसा ने लागै खारो
हद बेगारा री मार पड़ै
जद मिनख बिनावर अेक घड़ै

अे हाकम हुक्कम कसाई
मुंशी चपड़ासी नाई

अे हवलदार कणवारया थामी लोटा
फरसां नै मारै छांटा
धाणायत बोलै कूड़ घणा
करसा रा करम कूड़ घणा
अे नित रा फोड़ा घालै
डरिया सूं काम न चालै

इण धरती री धणियाप सारी हाली री
फुलवाड़ी है माली री
धण-संपत सग मजूरां री
अब बीती बात हजूरां री

जाग रणबंका सिपाई

आपणो संसार न्यारो जीवतो मरु देश प्यारो
हल रयो निकमो पगां में धूल आपा रो जमारो
आज राजस्थान थारो ग्यान नै अभिमान सारो
सिखर सूनो बेजगां में सिर लुकावै वण बिचारो

इण घड़ी में बेर क्यूं बीरा लगायी
जाग रण बंका सिपाई

जिण रमायो मोलें मेणो सूरमो रजपूत सैणो
आज उण आंडाखेला रा हाय गमग्या सीस गैणो
फर थारो नींद लेणा रख्यात सू विपरात वैणा
छोर सी जीवण तला रो छार माथै बैठ रेणो
क्यूं गमावे सैंग पीढ्या रा कमाई
जाग रणवंका सिपाई

आज आडा आदमी नै और अक्कल री कमी नै
राख आडा दे दिलासा जीमग्या जबरा जमी नै
रषड़ां री बेगमी नै माफिया री मर्दमी नै
भूल नै देखे तमासा भूत लोगों हाकमी नै
राज री कूंची दलाला नै दिराई
जाग रणवंका सिपाई

बाप नै बेटो छले है रूंख कांटा रा फलै है
आज दुसमण है गदी में घर दिया सू घर जलै है
शूरता गर्म में गलै है पच मारिग सू टलै है
राज बलै री घट-चटी में पाप रा पूला पलै है
भूलग्या सिरपच निबला सू सगाई
जाग रणवंका सिपाई

हेत में हड़ताल अड़गी द्वेस में सुख चाल गड़गी
खूंटा री रायकी में खेत-खड़ री खाल कढ़गी
समझ्या री साख सड़गी वीरता बेमार पड़गी
छोडरां री लायकी में याषिया री वास चड़गी
नायका री नीत सू ढटगी भलाई
जाग रणवंका सिपाई

आज रा उत्तर लेपा है धार सूँ अक्कल छवा है
ऊँग झुध-बुध साभ रेवा हया जमाने री हवा है
आपरी अक्कल गमा है ने जमाने ने रवा है
तो भारये मैदान केवा हया जमानै री दशा है

आज जाग्रत देश में धरती समायी
जाग रणबंका सिपाई

पिण आगै-आगै हालो

माइ धीमा सुधरा हालो पिण आगै-आगै हालो
आगै हाल्यो मिनख जिनावर पगा ऊभ हाथां खातो
अजा आगै हाल्यो मूढ सिकारी गडका पर लाठी घातो
आ जुग जुग हालै मानखा जीवण रा नाव उछाला
माई धीमा सुधरा हाला—पिण आगै-आगै हालो

आगै हाल्यो वो नर-राकस मिनख मिनख नै जिण खाया
आगै हाल्यो वो खेतीखड़ मिनख जोत नै हल बाया
ओ पग पग काटा भागता मारग नै कियो सवालो
माइ धीमा सुधरा हालो पिण आगै आगै हालो

आगै हाल्यो भोपा मोयत कामण सींग पैद भण नै
आगै हाल्यो सूर सिपाही धाड़ छोड राजा बण नै

पिण आगै आगै हालो

ओ जावै जा आगै वधै मरलोड़ा लागै टालो
भाई धीमा मुधरा हालो पिण आगै आगै हालो

अब करसा कारीगर जाग्या जूथ बाँध आगै वधसी
झटक करै आरै मारग में वारा धड़ पल में पड़सी
इण नित री हलचल माय नै जीवण रो सार समालै
भाई धीमा मुधरा हालो पिण आगै आगै-हालो

जलम लियो सो जीवो वधसी कद ओछो पड़ पाय नहीं
कभी फोक धरती सूं निकलै बीज पताळां जाय नहीं
ओ गयो रूप आवै नहीं रुक जायो जम रो झालो
भाई धीमा मुधरा हालो पिण आगै आगै हालो

पाछो पण कुदरत सूं आँवलो रुक जावै सो मरै परो
जग जीवण नित आगै हालै ओ कुदरत रो नेम खरो
पण बीता वद पाछा फिरै कद विरला करै कमालो
भाई धीमा मुधरा हालो पिण आगै-आगै हालो

आज रा घत्तर नंधा है धार सूँ अक्कल घवा है
बैंग सुध-बुध साभ रैग्या इग्ण जमानै री हवा है
आपरा अक्कल गया है नै जमानै नै रवा है
सो भारथै मैदान कैग्या इग्ण जमानै री दशा है

आज भारत सीस मं धरती समायी
जाग रगाथंका सिपाई

पिग्ण आगै-आगै हालो

भाइ धामा मुधरा हालो पिग्ण आगै-आगै हालो
आगै हाल्या मिनख जिनावर पगा ऊभ हाथा खातो
अजा आगै हाल्या मूढ सिकारी गेंडका पर लाठी वातो
आ जुग जुग हालै मानखा जीवग्ण रा नाव उछालो
भाई धामा मुधरा हाला—पिग्ण आगै आगै हालो

आगै हाल्या वो नर-राकस मिनख मिनख नै जिग्ण खाया
आगै हाल्यो वो खेतोखड मिनख जोत नै हल धाया
ओ पग पग फाटा भांगता मारग नै कियो उजाल्यो
भाई धीमा मुधरा हाला पिग्ण आगै आगै हालो

आगै हाल्यो मोपो प्रोयत कामग्ण सीग्व वेद भग्ण नै
आगै हाल्यो घर सिपाही धाक छाड राजा बग्ण नै

पिण आगै आगै हालो

ओ आगै सो आगै वधै मरतोड़ा ख्वांगै टालो
भाई धामा मुधरा हालो पिण आगै आगै हालो

अन्न फरसा कारागर लाग्या जूथ बाँध आगै वधसी
झटक फेरै आरै मारग म बारा घड पल में पड़सी
इण नित री हलचल माय नै जीवण रो सार समालै
भाई धीमा मुधरा हालो पिण आगै आगै-हालो

कलम कियो सो लागो वधसी कद ओछो पग पाय नहीं
कमी फोक धरती सूं निकलै बीज पताला जाय नहीं
ओ गयो रूप आवै नहीं रुक जायो जग रो भालो
भाई धीमा मुधरा हालो पिण आगै आगै हालो

पाछो पग कुदरत सूं अँवलो रुक जावै सो मरै परो
जग जीवण नित आगै हालै ओ कुदरत रो नेम खरो
पल घाता कद पाछा फिरै कद विरला करै पसालो
भाई धीमा मुधरा हालो पिण आगै-आगै हालो

औरै फूल सब हुवै न इतरा जितरो लाल हुयो ओ फूल
किण मदवै री चिता मायनै उठियो इण गुलाब रो मूल
देख देख डाळा रो झुरमुट वार वार ओ उठै विचार
मर्‌यो हुसी कोई मतवालो अपणी प्याली अठै बिसार

श्री अमर देपावत

परिचय — स्व० मनुज देपावत रा बडा भाई श्री अमर देपावत राजस्थानी साहित्य नैं उण विश्वविख्यात कलाकार उमर खैयाम री रुबाइया रो अनुवाद दियो है जिण नैं पाकर इरेक भाषा गौरवमयी हुई है। श्री देपावत रैं अनुवाद नैं पढ'र हर कोई मिनख आ बात के सकैला के हिन्दी में हुयोडा रुबाइया रा धीमिया अनुवाद सरसता नैं कोमलता में इण री होड को कर सकै नी।

आ बात सही है के प्रतिभाशील कवि रैं वास्तै मौलिक रचना लिखणी जितरी सोरी है, अनुवाद करणो उतरो ही दोरो है। मूल कवि री रचना री चिता-ई-चिता में अनुवादक दुबलो हो जाया करै है। पण श्री देपावत नें इण काम में आशा सूं घणी सफलता मिली है। आधुनिक राजस्थानी साहित्य में अनुवाद करणैं री परंपरा सगला सूं पैली इण कवि द्वारा ही कायम हुई है। इण खातर कवि नैं जितरी बधाई दी जाय थोड़ी है। इण तरुण कलाकार सूं राजस्थानी साहित्य मौलिक रचनावा री भी उडीक राखै है।

मस्ती रो संदेश

जाग जाग मतवाली मरवण, बीती रात, झड़्या तारा
कूक कुरझड़्या रही ताल में, बोल रया पछी प्यारा
लिया हाथ में जाल किरण रो आयो देख शिकारी एक
लीनी बाघ धरा री बाया पास उजालै रो दे फैंक

लाल आयो सूरज आभे में, पी मदिरा, कर आंख्यां लाल
सुपनै में कुण कह्यो मनै, रे जाग जाग ठेके में चाल
कुण जाणै कद सूख जाय आ थारै जीवण री दारू
मूढ फिकर में गमा न उमर, मतवालो हुय गा मारू
बीती रात, कूकड़ै दीनी ऊँचे सुर में बाग पुकार
खोल खोल, मतवाला बोल्या, ठेके ने ओ ठेकेदार

जल्दी कर तू, वखत गमा मत, है कितरै दिन रो रहवास
गयां पछै कुण आयो पाछो, झूठ भलै आवण री आस
खिलै फूल बागां में कितरा रोज, देख, सूरज रै साथ
और मिलै कितरा माटी में भर डाली सूं अंतिम बाथ

लै हँसता फूलां ने सगे आवै चैत माह ओ हेर
कर जावै फूटल गे दिगलो जातां हाय आवरी बेर
देख मिजाजण, हरियाली आ हरी-भरी कितरी सुन्दर
चालै धार नदी री मधरी धांमें सुर कलकल कर कर

सुण सुण री बादीली म्हारी, कुण कैवै मूं धीमो बोल
धाह भरै किण रे होठां पर छिड़कायो है इमरत घोल
ले ले जो कुछ पड़्यो सामनै, बाकी सब होयगा दे धूर
बनै गयां पूं दोखे दगड़, डूगर आछ्या दीखे दूर

मस्ती रो सन्देश

सुख दुख रवै घूमता थू ही, फिक्र न कर तू फोड़ा री
ऊखल् में सिर दिया सहेली, चिता किसी धमोड़ा री
देवदूत चाल्या उण जाग्या ले तारा रा तेज विमाण
जठै देह म्हारी री माटी रह्यो विधाता बैठो छाण

और हँसी म नाख दियो वा दारू नै पाणी री ठौड़
रग रग म रमग्या वो दारू, किया सबू मैं उणनै छोड
और फूल सब हुवै न इतरा, जितरो लाल हुयो ओ फूल
किण मदवै री चिता मायनै उठियो इण गुलाब रो मूल

देख देख दाखा रो झुरमुट बार-बार ओ उठै विचार
मरयो हुसी कोइ मतवालो अपणी प्याली अठै विसार*

*ऊमर खइयाम री रुबाइयां रो अनुवाद

अे बिन पइसा नहिं बात सुणे रिश्वत सूं सगला काम सरै
सरकार घणो घाटो खावै बन्ल्ले मे खूजा आप भरै
मैं खुल्लमखुल्ला दी सुणाय मन मे मन मे सै लोग भणै
चोरा रा चाटूया है अफसर भूखा री बसक्या किया सुणै

श्री भीम पांडिया

[परिचय— श्री भीम पाडिया अेक उठतोडो नौजवान कवि है। इणरी कविताबा मे जनता री आवाज नै समय री माग है। कवि रो सुर मधियोडो न भाषा रो बणाव ओपतो है। जदो कवि आपरी साधना मे आमण सू नहीं डिगियो तो साहित्य मे आपरो चोखो स्थान बना सकैला।

कविरो जलम रामरखजी पाडिया रे अठै सवत १६८६ री असाढ सुदी १३ नै बीकानेर मे होयो। स्थानीय छापा में कवि री कविताबा बराबर छपती रेवै है। राजस्थानी साहित्य कवि सू खासी आसा राखै है।]

दिवलै री जोत

ओ दिवलै री जोत ! अबै तूं अेक सरीसी जगती रह,जे।
घोर अँधेरो भारत रो तूं अबै उजाळो करती रह'जे॥
बणया मकोड़ा से धनवाला, निरधण गुड़-मेलो आ घेरी।
च्याग कानी मूँ चूमे है, अबै निचड़नै म नहिं देरी॥
ज्यूं बुध, राहू—केतुड़े सूं करै कुचाली चाँदड़लै रा।
जदी धारै मैं चला हुवै तो अबै रुखाली करता रह,जे॥
ओ दिवलै रा जोत !

अबै क्रांति री जोत जगी है, जग कुनवाड़ो सगलो दीसै।
निरधाणयाँ रै मगरा माथै, धनवाना री जाण वसीजै॥
भोवा भाव अबै ओ हुयग्या, जलम जलम सूं ओ ह पीसाजै।
भूल जायला दशा आपरी, आनै याद दिरावी' रह,जे॥
ओ दिवलै री जोत !

देऊँ तन्हैं भरपूर तेल हूं, कद क्रांति में घटी मती तूं।
निरधण मा बलजावै साथै, इती क्रांति म बधो मती तूं॥
देख ! पून रै भालै सूं भी, दब दब कर झट बुझा मता तूं।
जेठ महीनै री किरणासी सदा चमकती रह' जे॥
ओ दिवलै री जोत !

ओ दिवलै री जात ! क्रांति री झूपड़ियां सू लपट उठादे।
घणै वेग सू लगा अमेदामहला री चोटी पहुँचादे॥
जका खोस निरधण री नांदृया महलां म सुख सू पाळ्या है।
बोरी काचा नींद तोड़, तू चेता अबै करातो रह'जे॥
ओ दिवलै री जोत !

देसडले रा लोग-लुगाइ, राम-राज रो अनुभव करले।
गाँधाजी रा राम राज रो साचो सपनो साचो हुयले॥
जिते चाँद सूरज चमकै है, तूँ भी बिते चमकती रहज्जे।
म्हारी भारत मायड माता माथैसदा ताज चमकाती रहज्जे॥
ओ दिवलै री जोत।

खुद सू निमलो जद कोय मिलै कुछ भाव दया को बताया करो
सबलो जद आकर वार करै डर सीस गर्द न झुकाया करो
जद हिम्मत रो कुछ काम पड़ै मत जीव जरा भी लुकाया करो
घर को नुकसान वणै जद भी मन देस भला मे लगाया करो

श्री हीरालाल शास्त्री

[परिचय—" कुछ सहृदय पाठकों की माग के जवाब मे ये नये गाने बनाने पडे हैं । कई सालों से छुटे हुए अभ्यास को पुनर्जीवित करना जरा मुश्किल होगा ।" शास्त्रीजी आ शब्दा रे साथे सन् ५१ रे दिना मे आपरे लारलै अभ्यास नै पाछो निभा लियो निजरी परतक सारा अै कवितावा है । राजस्थानी मे कवितावा लिखणै रो उच्छाव शास्त्रीजी नै ठेठ सू रयो है । 'सपनो आयो घणो जबरो' आ री अेक मोकली ख्यात पायोडी कविता है । आ शास्त्रीजी री खूबी है के अै ग्याली सपणा देखणिया ई कवि कोयनी सपना नै साच करणिया सरमा है । - -

शास्त्रीजी रा गाना में जिनगानी री करडी वधली, ताती ठडी नै दोरी सोरी बाता रा छोल उछाला मारै है । 'पुराणी पूजी' री पैली लाइन सूँ लगा र 'फक्कड भाव' री लारली लाइन ताई शास्त्रीजी रै जीवण री गगाजमनी पोथी है जिणरा आखर आख रा आसू, होठा रो हमरत, हियै री हिम्मत नै साचै सेयाग्रत सूँ लिखियोड़ा है ।

शास्त्रीजी रो जीवण चढाव रो जीवण रयो है । वनस्थली विद्यापीठ रा आप सस्थापक है नै महान् राजस्थान प्रात रा भूतपूर्व पेला प्रधान मत्री । अै चिमटो रोप, र जसण आला फक्कड़ भावी पुरुष है । सफलता ही जिण रो मजल है । इया री कवितावा आधुनिक राजस्थानी कविता साहित्य में हमेसा जागती जोत रो काम देवैला ।]

पुराणी पूंजी

पुराणी पूंजी पे, मायो मान जा, नहिं काम चले लो
पुराणी पूंजी पे माया मान जा

थारा बडका बडा हुया हा बडा करया वे काम
पण बडकां की करी कमाई अब रे कीने काम रे
नहिं काम चले लो

थारो कयो या छे तू तो ऋषियां की सन्तान
ऋषियां का सा काम करे तो दुनिया भी ले मान रे
नहिं काम चले लो

जग जाणे छे थारा पुरखा हा जोधा बलवान
या की सी तू करे बहादुरी जद रे थारी स्यान रे
नहिं काम चले लो

गुण भी हा अर मौका भी हो बडा हुया जद सेठ
गुण कीने मौको भी निकल्या मुश्किल रैसी पेट रे
नहिं काम चले लो

राज मुलाजिम मामूली की पैली जमती धाक
अब तो सेवा करयां बिना सू कदर बराबर खाक रे
नहिं काम चले लो

परजा मंडल कांग्रेस में शुरू करयो तू काम
काम करयो जद दुख भी पायो और मिल्या नहिं दाम रे
नहिं काम चले लो

अङ्गरेजा को करयो सामनो चल्यो गयो तू जेल
रजवाड़ा भी भाया तन्नै दियो जेल में ठेल रे
नहि काम चलै लो

जेल 'कॉट' तू माला पेरी होगो थारो नाम
दुनिया थारी जै भी बोली नेता दानो घाम रे
नहि काम चलै लो

चल्या गया अंगरेज आपड़ा राजा छोड़यो राज
अब पाछै तो फैसो कोई थारा ही सब साज रे
नहि काम चलै लो

पैली जो तू करी कुमाई ऊ को चूक्यो मोल
अब जो करसी सो तू पासी हिरदा में लै तोल रे
नहि काम चलै लो

सेवा को तू नाम धरै अर निजू बणावै काम
दुनियां सारो मरम समभसी तू होसी बदनाम रे
नहि काम चलै लो

जराक सुणल्यो

जनता निनै सुणावै प्रभुजी जराक सुणल्यो
कद की खड़ी पुकारै अब तो जराक सुणल्यो

जबरो स्वराज आयो दुख मोकलो लियायो
कद ताईं भोग्या जास्या प्रभुजी जराक सुणल्यो
आजादी आगी कद छै रोटी' र कपड़ो गायब
जनता छै भूखो नागी प्रभुजी जराक सुणल्यो

पीसा को मोल घटगो चीजां से होगी महंगी
पीसो भी पल्लै कोनै प्रभुजी जराक सुणल्यो

पैदा करै छा अपणो गुजरान भी चलै छो
लेवो कठा सूं आगी प्रभुजी जराक सुणल्यो

पूंजी को जोर भारयो मिनखा को पूछ कोनै
तड़पे मजूर नाग प्रभुजी जराक सुणल्यो

म्हे भी मिनख कुवाबा बोले छै आग्निासी
सुधरया सरै जमारो प्रभुजी जराक सुणल्यो

अछूत हा या हरिजन ये नाव अब चुभे छै
औरा जिस्या म्हे क्यों न प्रभुजी जराक सुणल्या

आया गया नै म्हे भी दे छा सरण कदे ता
लेता फिरा छा सरणा प्रभुजी जराक सुणल्यो

मुलाजमा के ताई हाकम हुया ये सारा
नेता बण्या फिरै छै प्रभुजी जराक सुणल्यो

धाया पतीजे भूखा रोटी दिखावो पैली
स्वराज कोई चाटे प्रभुजी जराक सुणल्यो

ललकार

सुख संपत बीच रहो जद तो मत गर्व गुमान रखाया करो
विपदा जद हो तस्वीर करो इकनाक मती घबराया करो
नरमी कर आपसरी में रहो परड़ा बण भाया भुलाया करो
जबरो बण जा अपमान करै झट जोस जरा सो दिखाया करो

खुद सूं निमळो जद काय मिलै कुछ भाव दया का बताया करो
सबळो जद आकर वार करै डर सास कदै न झुकाया करो
जद हिम्मत को कुछ काम पड़ै मत जाव जरा भी लुकाया करो
घर को नुकसान भलै जद भी मन देस भला म लगाया करो

सुभ काम सरू कर आप जमो मजबूत रहो घबराओ नहीं
जद भीतर बाहर साफ रहो खतरा सूं कदे कदराओ नहीं
सब मेळ करो सब साथ चलो सब एक रहो बिलराओ नहीं
ललकार जवाब करो मरदों सच बात कहो कलराओ नहीं

भगवान भजो बिसराश करो चित पाप कथा म दिया न करो
उलटी सुलटी कोय बात करै पण मान कदे भी लिया न करो
अब छूट सजीवण बूटि पिवो अर भैर कदे भी लिया न करो
सत को पण आप कड़ो पकड़ो बिन सत्त कदा भी जिया न करो

तकदार का ठीकरो फाड़ धरो पुरसारथ लेख लिखाओ जरा
सब झूठ निलाड़ लिख्यत करो अब भाग कै आग लगाओ जरा
मुरदापण छाड़ कै मर्द बणो मरदी कर ख्याल दिखावो जरा
दिल का धक्का सब दूर करो डर ने डरपार भगाओ जरा

फक्कड़ भाव

जागै जागै फक्कभाव अबी अब जाग्या सरसी जी
बिन स्वारथ सेवा कै तांई धारै फक्क भेक
ममता मो धारा हा छाड़ै लागन लगे सब श्रेक
अजी अब जाग्या सरसी जी

मुख छोड़ भलघर भी छोड़ै छोड़ै घर का बार
मान बड़ाई बिन छोड्या सूं फक्कड़पण बेकार
अजी अब जाग्या सरसा जी

सेवा के ताई तो फक्कड़ भाग्यो दौड्यो जाय
आका जी ने काम होय सो फक्कड़ सूं बतलाय
अजी अब जाग्या सरसा जी

दुनिया का मामूली नाता फक्कड़ जावै लोप
सत सूं धूणो तपै सनातन जमै चीमटो रोप
अजी अब जाग्या सरसा जी

धक धक करती झल फूटै जद चित्त होय बेचैन
नशो अणूतो छायो रेवै मस्त होय दिन रैन
अजी अब जाग्या सरसा जी

काम करै सो करै लगन सूं भिड़ जावै खम ठोक
धुन को पक्को फक्कड़ हाथ देवै तन मन झोंक
अजी अब जाग्या सरसा जी

फक्कड़ हो सो डरपै कोनै सदा होय निर्भीक
दूजा ने डरपावै कोनै फक्कड़ पूरो ठीक
अजी अब जाग्या सरसा जी

मुश्किल आया करै सामनो होय घणो मजबूत
दबै नहीं घबरावै नाहीं फक्कड़ हो अवधूत
अजी अब जाग्या सरसा जी

घोड़ नै राजी करबा नै करै न वेजा काम
खुद कै ताईं खुद नहीं चावै दाम हाय या नाम
अजी अब जाग्या सरसी जी

ठुचा पुची बाता छोड़ै सैल करै आकास
दिल समदर सा हो जावै जद फक्कड़ नै साबास
अजी अब जाग्या सरसी जी

लाग लपट जरा नहिं राखै चालै सूदा सट्ट
साचो फक्कड़ बण्या सूं ही बेसक होवै ठट्ट
अजी अब जाग्या सरसी जी

कुण प्राणी सूतो कुण प्राणी जागै
सरवर सू पछी प्यासोई भागै
यो जग सपनो साचो सो लाग
जाळ फस्यो पत्री भागण लागै
दीसत आधो हुयो रे बटोही
ऐसी या माया बिसेस

श्रीमती राजलक्ष्मी 'साधना'

[परिचय—— श्रीमती राजलक्ष्मी 'साधना' राजस्थानी साहित्य मे मीराँ नै महादेवी रो काम पूरो कर रयी है। उणकी तपस्या, उणकी भावना नै उणकी लगन मीराँ-महादेवी मे है वे सगली बाता श्रीमती साधना में देखना मिलै है।

राजस्थान रा प्रसिद्ध क्रांतिदूत नै 'चेतावनी रा चूंगट्या' रा कवि डा० केसरीसिंह जी बारहठ री सुपुत्री श्रीमती 'साधना' मे उणा री आत्मा री अमरता नै भव्यता रा दरसन हुवै है।

श्रीमती 'साधना' रा गीत आत्म आराधन नै भगवत अर्चन रा गीत है। गीता में मिठास, भगति ने भावुकता रो मेल है। राजस्थानी साहित्य मीराँ री इण प्रतिमूर्ति नै पा'र फूल्यो नहीं समा रयो है। आसा है श्रीमती 'साधना' री साधना आगै जीवण चालती रसी नै मातृभाषा रै मींदर मे वे आपरा भाव कुसुम चढाता रैसी।]

अैसो जिग रच्या राजवी

१

वीरा !, घण घर वसिया रे वास
भरी रे, मदछक छोळिया
वीरा ! भटकी रे च्यारू ही कूट
सुर्ग चढी रे पड़ी नरक में
वीरा ! भोग्या रे केताई भोग
रोग मिल्या रे अणपार रा
वीरा ! अब ता करी दया दीन पर
म्हारा सतगुरु पकड़ी रे बांह
अैसो जिग रच्यो राजवी ।

तन जल्या रे वीरा मन जल्यो
अै तो जल गया पांचूइ वीर
पांच पुरख दस नारिया रे वीरा
अै तो जल बल हाय गया राख
वीरा ! बैठी समदरिया री तीर
आयो गगन चढ सुवटो
या ता दीनो रे अेक सदेस
पाव पधारे पल टाळता
अैसो जिग रच्यो राजवी ।

वीरा ! आव्यो रे भगती रा चार
साळ समता रा पेरया घाघरा

धीरा ! दिवलो संजोयो रे सान रो
मारग सुद्दारयो हरि रे नांव सू
धीरा ! आयो रे अनहद नाद
उण रे साथे आया पीवजी
धीरा ! कांई करू रे बखाण
सघ सुलाळा रे म्हारा पीवजी
अैसो जिग रच्यो राजयी ।

२

नदलाल ! आयो, तो जोऊं थारी बाटड़ी
सोना रा रूपा रा पात्र म्हारै है नहीं रे कान्हा
म्हारे तो श्याम । अेक चंदण री काठड़ी
मैं तो हूँ गरीब बहु, दीन औ मलीन प्रभु
जीमो तो स्याम ! म्हारे बाजरी री घाटड़ी
दिल री पुकार सुण आवो जे सावरा
भूलण नै प्रेम डोर नैणां हदी पाटड़ी
साधन' सदा सभागी नित ही पुकारै कान्हा
मिलबा नै आज्यो स्याम ! जमना री घाटड़ी ।

३

जागता पुरान नै आदेस
माई, अैसो लियो रे जोगिया भेस
माला नाहीं कमडल नाहीं न है झोळी हाथ
गयी नहीं वन में, गयी नहि तीरथ, जग सू नवायो है माथ
काया में रसियो है भँवर प्रलोभी हण सू ह तजियो यो देस

रोहोत्तर

छुण प्राणी सूतो, कुण प्राणी जागे
सरवर सू पछी प्यासोई भागे
यो जग सपनो सांचो सो लागे
जाळ फस्यो पछी भागण लागे
दीसत आघो हुयो रे बटोही श्रैसी या माया विसेस

तन रंग दीनो, मन रंग दीनो
रंग दीनो सील सतोस
जलमजलम रा करम रच्या मैं
जब लग रयो कुछ दोस
अब तो सुण रे हो 'साधन' सागर कट गया सरब कलेस

ज्यू सूरज चाद घटाऊड़ा आभै नै खाली कर जावै
ज्यू नैणा नीर ढलै ढलकर धरती रा समदर भर जावे
झनको झीणो सो देकर ज्यू बिजली बादल नै डरपावै
ज्यू फूल खिलै, आभो पिघलै दिवजलै जोत मे मिल जावै

श्री जगमोहनदास मूंधड़ा

[परिचय—श्री जगमोहनदास मूंधड़ा बीकानेर रै अेक सम्पन्न माहेश्वरी परिवार में पैदा होयोड़ा कलाकार है जका खाली गीतकार ही नहीं चोखा वादक सुरीला गायक नै ऊंचै दरजै रा चित्रकार भी है। साहित्य प्रेम कवि री खानदानी सपत्ति है।

कवि री भाषा लोकगीतां जिसी मीठी नै कल्पना कूंपल सूं कवली है। अध्यात्म नै भक्ति री धरती माथै कवि आपरी कविता रो म'ल खड़ो करियो है। जकी री नींव कवि आपरै पिताजी गिरधरदासजी मूंधड़ा सूं प्रेरणा पा र काठी भरी है।

व्यापारिक वातावरण में रै र भी कवि सुरसती रै मंदिर रो पुजारी बणियो है, आ खुशी री बात है। आशा है के कवि इण परंपरा नै ठेठ ताई निभासी।]

गीत

दिवला री रात जल्या हंस हंस, मुळकाओ थे सुर-उगाळी में,

आ भरम कवाडर, बलती ही
जग में पतली सी बाटकली,
अण पांपरा अणबुझिया दीवला
चमकादा चम चम गतकली,
आपस रा जिण सू मिलवाने
हिवड़े में पीड़ लिया चवाया,
आ आंख्या न डोरर सू गोती
मिलबो री चिरिया में बुझग्या,

घर काया, फूल बना मुळके [illegible] आलरवाला में,
दिवला री रात जल्या हंस हंस, मुळकाया थे सुर-उगाळी में,

आ निया पावले बिछतूरा
रा रया, छिपक मेला मेलो,
बातों म लाग रया प्यार
पहळा, तिरस्यो रा मलो,

[illegible] पर मूरमो मिलवाने
[illegible] दूर, पाणी पहलो,
[illegible] में दूर का हिल्या न.ी
मिलबो रा चिरिया में बुझग्या,

[illegible], [illegible] बद बह बाया बाग पनाळो मे
दिवला री रात जल्या हंस हंस, मुळकाओ थे सुर उगाळी मे,

सरवर

ज्यूं सूरज चांद बटाऊड़ा
आभै नै खाली कर जावै,
ज्यूं नैणां नीर ढलै ढलकर
धरती रा समदर भर जावै,

झबको झीणो सा देकर ज्यूं
बिजली बादल में डरपावै
ज्यूं फूल खिलै आभा पिघलै
दिव जलै, जोत में मिलजावै,

जावण दारू री धार बणै, ढल जाय मौत रा प्याला में,
दिवला जो रात जल्या हस हस, बुझग्या वा सूर उगाला में,

जठै कठै ई लाग रया अँगरेजी दफ्तर
बोलै है अँगरेजी मे मे बाबू अफसर
होटल मे अँगरेजी ढग अँगरेजी बटलर
गली गली में अँगरेजी अँगरेजी घर घर
हिन्दी री उम्मीदा सारी ढहगी
अँगरेजी गया पण अँगरेजी तो रहगी

कुँवर कानसिंह भाटी

[परिचय—कुँवर कानसिंह भाटी राजस्थानी भाषा रा अेक सिमरथ कवि है। इणा री कविताआ मे व्यंग्य री मोकळी मोकळायत रेवै है। भाषा माथै इणा रो पूरो इदकार है। इया तो अे हरेक तरै री कविता लिखै है पण आ री आत्मा तो आध्यात्मिक भजना मेई घणी राजी रेवै है।

कुँवर सान रो जलम भीकमकोर (मारवाड़) रा जागीरदार ठा० प्रतापसिंह जी रै घरै संवत १९७१ री माघ सुदी १२ नै होयो पण आ रो सनध बीकानेर सूं ई रियो है। आजकाल आप बीकानेर में तहसीलदार है। बरसा सूं सरकारी पद माथै रैवर भी आप सदा सादगी सूं रेवै है।

जागीरी सस्कारा मे पल'र भी कुँवर सान जमानै नै बदल देण आला मिनखा मा सूं है। आ री धर्मपत्नी श्रीमती सुबोध कुमारीजी जकी आज राजस्थान री लुगाया मे नई चेतना भर रयी है, रो जीवण कुँवर साहब सो साहस पूर्ण ही प्रगतिशील रचनात्मक है नै साथ ही सामन्तीवर्ग रै सारू अेक आदर्श है।]

अंगरेज गया पण...!

ठाठ बाट है अगरेजी अगरेजी खाणो
चाल ढाल है अगरेजी अगरेजी गाणो
सूट बूट टाई रुमाल अगरेजी बाणो
रीत, नीत अगरेजी रो उलझ गोड़ो ताणो,
हिन्दी ईवेला में तरसती रहगी,
अगरेज गया पण अगरेजी तो रहगी।

अगरेजी रा तार चले कागज अगरेजी
अगरेजी अखबार छपे खबरा अगरेजी,
अगरेजी व्यापार गजब चीजा अगरेजी
अंगरेजी रो जोर शोर सब कुछ अंगरेजी,
हिन्दी रै मन री मन में ही रहगी
अंगरेज गया पण अगरेजी तो रहगी।

जठे कठे है लाग रया अगरेजी दफ्तर
बोले है अगरेजी में है बाबू अफसर,
होटल में अगरेजी ढग अगरेजी बटलर
गली गली में अगरेजी अगरेजी घर घर,
हिन्दी री उम्मीदा सारी ढहगी
अगरेज गया पण अगरेजी तो रहगी।

हिन्दी रा हाँ पूत परँत अगरेजी चेला
मूड मुडाय मुडाय हुआ पंगत रै मेला,
अगरेजी री चकाचौंध में होकर गैला
रीझ गया अगरेजी पर बणग्या अलबेला
हिन्दी तो हिरड़ो मसोस कर रहगी
अगरेज गया पण अगरेजी तो रहगी।

इक्याशी

चौमासो

बरसे पाणी रिमझिम रिमझिम, गरजे बादल घर घरं घरर
चमके बीजल चारू ग्यानी, टेडर टरावे टरर टरर।
भरग्या सारा तालर छीलर, नदियां में पाणी नीं मावे,
हालीड़ा कांधे लीना हल, कोड़ाया खेता नै जावे।
माटी रा घरिया माड़ माड़, टाबर मन में होवै राजी,
पाणी में खेले छप छप छप, कूदे दौड़ ले ले बाजी।
बोले मोरा पीहू पीहू, बाटा म हरियाली आई,
बस्ती में आयो घणो चाव, नेजो गावे मिल मिल भाई।
ग्वाला गेड्या ले हाथां में, गाया चारण ने जावे है,
देख देख हरियाली ग्यानी, हिवड़ो ग्यारो हरखावे है।
हरियाली पर लाल ममोल्या, जगा जगा पर पाछे आगे,
पन्ना रे कंठे में पोया, माणक रा टुकड़ा सा लागे।
मिटगी प्यास पपैये री, बन रा पछीड़ा फूल रया,
ऊंचोड़ी डाली हींड माड, बालक बारी सू झूल रया।
चोमासे में मौज मजैरी, मेवड़लो बूंया सू भारी,
अन धन सू कोठा भरजावे, 'वाह' सुखी होवे ससारी।

सियालो

कट कट दांत कटकणे लाग्या, कांपण लाग्यो तनड़ो थर थर
चढ़ी कंपकपी ठेठ कालजे, आग जगा लीनी है घर घर।
धूंणी ऊपर बैठा तापे, ओढ पावडी बूढा डाणी,
खुल खुल खुल खुल खांसी आवै, टपकण लागे नाका पाणी।
सरदी सू बाई टा आवे, आलस माड़ उबासी खावे,
गरम चाय रा लेवै गुटका, गड़ गड़ होको पीता जावे।
टाबर टोपा ओढ्या आवे, ग्यारो सी बकरा चर जावे,

बंय्यासी

होठ होय जावे लीला छम, नैणा में पाणी भर जावे।
सरदी में दौडे खेलै है, फाट हाथ पग न्यारा जवै,
बाल बादसा है बेपरवा, रत्ती भर भी नीं घबरावे।
ओला पड़ जावे जद कद तो, आ जावे है पूरी ठारी,
गुमराता रो रोग व्यापजा, बैदा रे बण आवे भारी।
बठे बठे पाणी जम जावे, रूखा ने दावो लग जावे,
डापरडी खोटी बाजे जद, जदै फदै धूं वर आजावे।
बड बड ऊंडा टापरियां में, गूदड ओढ ओढ कर सोवै,
खोटो 'फाह' सियालो आया, ऊठण री सरदा नीं होवे।

ऊनालो

आगण तप जावे तावड सू, टापरिया सै तप जावे है
लूवा रा बलता फटकारा, रुक रुक कर फेरू आवे है
जिवडो घबरावै गरमी सू, कोरो परसीनो चाले है
ऊमस हो जावे ऊपर सू, जणा डाल नै बा गाले है
उठे अलाया सै शरीर में, ज्यां पर चन्दण मेट लगावे
गरमी चढ जावै सिरा रै, जणा कालजा भी हिल जावे
घड़ी घड़ी सू कंठ सूक जा, होठा रै फेफी आ जावे
ठंडी ठंडी माटकड़्या रो, पल पल में पाणी गटकावे
पंखी ले ले हवा करे है, चैन नहीं पल भर भी होवे
नाख निसासा सारो ही दिन, बैठा ठाला यूं ही खोवे
कुत्ता जीभा काढ काढ कर, गली गली में सिसक रया है
कागलिया भी लुकग्या डरता, काव काव सै भूल गया है
ठंडी छींया तक तक रुक रुक, सैन मारगू सुस्तावे है

छाला हो जावे एड्या में, इतरो ओंलो दुख पावे है
सोरे सास नींद नां आवे, रात रात भर चाले बलती
ऊनाले री मौसम ओखी, 'कान्ह' सदा रेवे है तखली ॥

पंडित

आडा ऊबा तिलक बणाया, पोथी पतड़ा बगल दबाया
लंबा माला पकड़ हाथ में, जणे जणे में दोष जताया
गायत्री रो लीनों ठेको बाकी सगला बैठा देखो।
ब्राह्मणयान रो इक बामण ने वेद शास्त्र रो ओ ही लेखो
मेल्या तने पढण पढावण दुनिया ने रस्तो बतलावण
मरणो वा जीमण में कोरो अपणो मुतलब लग्यो बणावण
समझ देवता, तू है सेणो, लोक तने देवे है मेणो।
'कान्ह' छोड थोथी बाता ने भूठे जग में कितरो रेणो

ठाकर

बैठो मूछ्या रे देवे वट नसड़ी न राखे करड़ी लट,
अणगीज्योड़ो फिरे घमंड में अपणो रोब जमा लेवे झट,
ऊजलिया कपड़ा नित पेरे दाग लगण देवे नहीं वैरे
ऊपर सू तो घणो फूटरा, मन रो रोष मिटे नही वैरे
देख देख तन हावे राजी, नित रा बैठो करे मिजाजी
मेल्यो सो हो ठाय करण ने आय गमा दी सारी बाजी,
ठाकरड़ा सुण लीजे म्हारी, दो दिन री है दुनियादारी,
'कान्ह' कोप विधना रो हेला, फेर नहीं लागेला कारी,

साहूकार

बैठो गादी मसंद सहारे, खा खा पेट निकल ग्यो बारै
सेय हजारां घणी अणूती, बैठो कोरी गप्पा मारै।
पिचरंगी पेचो सिर पर है रीपिया सूं भरियोड़ो घर है।
माया रै मद में भरम्योड़ो, चढ़गी आख्यां सिर ऊपर है
साहूकार बण्या कर मेल्यो, पोसण रो जिम्मो सिर मेल्यो,
खुरच खुरच कर ल्याग्यो दुनियां कोरो झूठ, ठगो सूं खेल्यो
चेत चेत रे अब भी भाइ, सारा जमालै जकी गमाई
कूच नगारो 'कान्ह' बजैला, साथ चलै नहीं थारै पाई।

१

पलसै बारै टाबर खेलै खेत बणावै थानै पाल
हाली हल का ठाठ सुधारै गावै है तेजै री ढाल
मरद लुगाई यूं बतलावै, आयो समों भाजग्यो काल
पौ फाटी जद बोलण लाग्या पाख पखेरू पींपल डाल

श्री गजानन प्रसाद वर्मा

परिचय—हिन्दी रै हबोला मारतै समदर रै खारै पाणी सूं बरसा ताई तिस को बुझी नी जद ओ कामणगारो कलाकार राजस्थानी री नाडी रो मीठो पाणी पीवण सारू भलै घरा आ धमकियो । आवतै हीं इणरो कामण इसो चालियो के राजस्थान री प्रकृति, हरया भरया खेत, चौमासो, सावण, भादवो, हल, फरसा, धोरा, जीव, जिनावर, मिनख मजूर, सैंग इणरी कल्पनां, भाषा, गीत नै सगीत मे आ बैठिया ।

श्री वर्मा गीत के गानै हैं, मुरकी नाखै है जको सुणणिया को थाकैनी ओ भलाई हारो । इणरो कारण अेक ओ भी है के इयै आपरो मारग अलगो निकालियो है, किणी चीलै माथै को वगियो नी । मिनख नै प्रकृति रा जिसा रा विसा रूप लोगा री आख्या में लेराण आलो ओ कवि अनै खाली आपरी जलम भोम रतनगढ (राजस्थान) रो ही को रयोनी, वणसू आगै मोकलो आगै बढग्यो ।

रेल्वे और पी डब्ल्यू डी रा ठेकेदार श्री हनुमान प्रसाद जी रै घरा १५ जुलाई सन् १९२७ में जलम ले र श्री वर्मा वेगोई आपरै पगा माथै खड़ो होग्यो । साहित, सगीत, नै कला सू इणनै ठेठ सू चाव रियो । 'स्पन्दन' नै 'नये निबध' नाव री दो पोथ्या श्री वर्मा री छप चुकी है नै और केई छपवा आली है ।

आज काल ओ, वर्मा, बीकानेर, में रह कर प्रात भर मैं कला रै प्रचार प्रसार सारू राजस्थान कला केन्द्र रै सगठन में लू रयो है।

परभातै रो गीत

पोह फाटी जद बोलण लाग्या
पाँख पँखेरू पीपल डाल।
छोटकी दूयोराणी पीसण बैठी,
बाजर मोठ चिणा री दाल।
बड़ी जिठाणी जायो गिगलो,
बाजण लाग्यो सोवन थाल।
नणद सुरगी हाल्या देवै,
घर घर बाजै बानरवाल।

दिन चढ़ आयो गोवै ऊभ्यो,
गाया रो म्हारो बान्ह गुवाल।
आडो टूँटो हाथ गेडियो,
सिर पर बाध्या लाल रूमाल।
कान्है लटक लाल लोटड़ी,
सक्की है माटी री नाल।
घर री धिराणी गाय उछेरै,
मदरी मदरी चालै, चाल।

आगण में दो (य) चुगै चिड़कल्या,
बिखरेड़ी मोठा री दाल।
छोटी नणद भूंगरो काटै,
लुल लुल साफ करे है ढाण।
दादी तायी चरखो कातै,
बैठी है बे पीढ़ो दाल।
राख राबड़ी घोल सँवारै,
चतर चरखलै री बै माल।

झोंकी देकर हाकण लाग्यो,
गायां नै गुवालियो (रे) लाल।
पलसै बारै टाबर खेलै,
खेत बणावै बानै पाल।
हाली हल रा ठाठ सुंआरै,
गावै है तेजै री ढाल।
मरद लुगाई यूं बतलावै,
आयो समो भाजग्यो काल।

चौमासै रो गीत

आवै चिमकै बीजली जी
पुरवाई गे जोर।
काली कलायण ऊमड़ी जी,
नाचण लाग्या मोर।
खेत में दूयो हलकारो (हो)
बीजदूयो मोठ बाजरो (हो)
(फे) काचर बोर मतीरा—
पूरब में लाल सूरज उगि आयो।

हर्‌या हर्‌या खेत सुहावणाजी
बाजर चढ्यो निनाण।
खुरपा कसिया ले चलो जी,
दूयो मूळया पर ताण—

देरा इन्दर घररायो (हो)
मारूयो आज पायचो (हो)
(कै) ये मिल राम भणोजी—
पूरब में लाल सूरज उगि आयो।

मोठ लावणी कर चुक्या गे
कड्वी काटण चाल।
ग्यावड माता पूजल्योजी,
तिलक करूं में भाल—
घर घूघर घमकाओ (हो)
काल ने दूर भगाओ (हो)
(कै) से मिल मंगल गाओ,
पूरब में लाल सूरज उगि आयो।

सावण-भादवे रो गीत

सावण सुरंगो सरसावणो
भादवो सुरंगो मन भावणो।

काली सी कलायण घिर आवै है
झिर मिर मेह बरसावै है।
बिजली रो बद मुस्कावणो
भादवो सुरंगो मन भावणो।

प्यारू मेर मोरिया मचावै शोर
भौंभरी भणाका करै चित चोर

पपीहै रो बोल सुणावणो।
भादवो सुरगो मन भावणो।

हर्‌या हर्‌या खेत लहरावै है,
तेजडलै रा गीत कोई गावै है।
झोला मारै पवन सुहावणो
भादवो सुरगो मन भावणो।

नाचै गावै तीजडल्या री तीजण्या,
फोगडला में खेलै लुक मींचण्या
मुड-मुड हँस बतलावणो
भादवो सुरगो मन भावणो।

सावण सुरगो सर सावणो,
भादवो सुरगो मन भावणो।

धोळै चोळै मे चीण हाल आख्या मे ऐ घालै काजळ
झुरतो झटको दे माल खोस नैणा मे दुख बरसै बादळ
अ शाहू बण्या डाको राळै घर नोगत थानै है मादळ
ओ सरवर नीर भरयो दीसै पण पीवण मे कड़यो गादळ

श्री सूर्यशंकर पारीक 'भारती भूषण'

परिचय—श्री सूर्यशंकरजी नै राजस्थानी साहित्य सूं मोकलो ई प्रेम है। गाव गाव घूम घूम 'र श्रै नीरोंई जीवत साहित्य भेलो कीयो है। आध्यात्मिक जसनाथी साहित्य सू आनै घणो चाव रयो है। लोक साहित्य नै भेलो करणो भणणो-गुणणो नै सम्पादन करणै म आरी ठेठ सू मनसा रही है।

इणा रै सम्पादन मे जीव समझोतरी, गुणमाला, शब्द ग्रन्थ नै सरोधो नाव री पोथिया छप चुकी है। जिणा री राजस्थानी भाषा रा सगलाई विद्वान चोखी प्रशसा करी है। आ रै सपादन री विशेषता खास कर आ रै अनुभवा री गैराई है। भाषा माथै भी आ रो मोकलो इदकार है।

श्री पारीकजी रतनगढ रा रैवासी है। आ रै पिताजी रो नाव श्री बालूरामजी पारीक है नै आरी जन्म तिथि १६७६ रो मिगसर महीनो है। श्रे साहित्य मे 'भारती भूषण' रै उपनाव सू ओलखीजै है।

वे भर भर कन्था नै ओढै

बा लीरी लीरी घाघरियो, बा छींट छींट चुनड़ी राती
मुरझायोड़ो मुखड़ो नीचे, देख्यां सू फाटे है छाती
बा खुल्या खुल्या ले चीणा बाथ बा जेज करो ना घर जाती
खा मलक मलक लून्नी रोटां, पी पाणी ले सोवै शाती

धरती रा लाल बिलखता नै लालायित दाणा रे खातर
जद देखूं अंग उघाड़ा ने मेखलियो आडणियो नातर
काटां में पगां उभाणा नैं ताम्बै सी तपती धरती पर
दुख देख हियो रोवण लागे मुख रो सपनो जाऊ पातर

बा बाथ भरोटी लकड्या री घर शाश शहर म आवै जद
रस्ते में सहवै भूख प्यास, पण मोल पूरो बा पावै कद
कुनण सी काया नारी रा अपमान हुवै हा जावै हद
अं'ग तोड करै मे'नत भारी, मजदूरी ओछो पावै पद

घालै चोलै में चीण डाल आख्या में अे घालैं काजल
झुकतो भटका द माल खोस नैणा में दुख बरसै बादल
अे शाह बण्या डाको राले घर नौपत बाजे है मांदल
ओ सरवर नीर भर्यो दीसे पण पीणै में कड़वो गादलु

अे टाबर मुह फलको सो लै पलका फलका करता आवै
लाचार चिणा री रोटी नै, दोरी सोरी भी खा जावै
होली दिवाली अे मोके जे गुड़ रो दलियो पा जावै
करलाट करे भूखी आता आँता पर आँता बल खावै

अे मोहन भोग मलाई नै कोइ बात बडो समझै कोनी
पहुंचै नै पाणी री तरियां बढ्यण घो की चिन्ता कोनी

म्हारै के पइसे रो परवा लागै ज्यूं ही लागण घोनी
के भलो काम के बुरो-काम बरतै ज्यूं ही बरतण घोनी
ठठार पड़ै डाफर बाजै कप कप कर बालूजड़ो पावै
मजबूर बण्यो मजदूर कृषक बसतर विहीन तन क्या ढापै
सरदी में श्रोढ़ दुसाला ले मखमली मुलायम श्रै नापै
वै भर भर कथा नै श्रोढै दिन उग्या लागै पुन पावै

उड़ीका

निवण निवण म्हे लाख किरोड़ा, करा माहुश्रा या, कर जोड़
ये थारै बाचा नै पालो भारत श्रारा भल बहोड़
श्राटीला बादीला मोहण नन्द जसोदा रा धम्मोड़
श्रागा थक्का वेग पधारो श्रावण रा वाजणद्यो पोड़
विलिया चूक्या डाव चूकसी डाण चूकसी कालग रोड़
दुरबलिया र दोखी बोळा सोखी येही राघा जोड़
गोपाळी काळी कोड्याळी गाजर नै ज्यूं माळी तोड़
इमरत री कूपी गाया रो दुग्दी देवै गळो मरोड़
माँ धेनु रो हेत रेत में मिलसी गोमन्द वेगो दौड़
राहे रूकमण थोड घणेरो राधा नैं बैकुंठा छोड़
ग्यान ध्यान री धार न जाणां श्रापस में लेखा सिर फोड़
मै तो दूजा म्हे दूसरा श्रो वे घाल्यो घर में घोड़
श्रापण तापण मेट माहुश्रा श्राय'र श्रानै पाछा मोड़
ये सगरा सुपनै में श्राया फिर क्यू श्रोटी मोटी छोड़

पिचाणनें

कारीगर नीचै आयो 'करणी' रा खोभा दीना
बखता रा प्राण पखेरू मुक्तो रा मारग लीना
हाली रै खांधै मेली खोडा मे खोड़ पुगावै
आ हरखचन्द री हेली बखता री बात बतावै

श्री नानूराम संस्कर्ता

[परिचय —श्री सरस्वती प्रकृति री कोमल गोद मे किलोल करणैवाला रगीला कवि है इणा री, 'कलायण' 'दस देव' और 'समय वायरो' नाम री तीन पोथ्या राजस्थानी भाषा मे जनता री जीभ माथै नू वे नखरै स नाच घालै है। प्रकृति वरणाण में तसवीर सी कोरणी और समय सारू चालणो, दो गुण इया मे पतजी हाळा सागी मिलै है। बीकानेर राज्य थका कळायण माथै इया नै पाच सौ रिपिया मिल्या हा। हिन्दी में श्री मैथलीशरण जी रो 'जयद्रथ वध' नै श्री रामनरेश जी रा 'स्वप्न, पथिक, मिलन' जिसा खड काव्या री तिरिया इणा रै 'वटोही' करुण काव्य मे भव्य भावुकता तथा विमल व्यक्तित्व सामो दीखै है। कवि री भलै ही केई पोथ्या छपे विना पडी है, जका-री मुरधर रै जणै २ नै घणी उडीक लाग रयी है।

कवि पदरै वरसा सू माध्यमिक मदरसै मे टाबर भणावण रो काम करै है। पण ! मुळकतै मू ढै रा मीठा बोल दुग्ध पर शोवण हाळी दया और 'आप रो उजाड'र पारको सुधारण हाळी आदत देख्या, आदमी भूजळो हुज्यानै है। औ गाव कालू रा वासी है। आपर गाव-री आसी सस्थावा मे भरपूर भाग लेवै है नै सुरसुती मिदर रा पक्का पुजारी है]

बिजली सी कड़की नस नस में
धाध्या कवच उतरयो पोढी,
हुंकार बम्म बम्म महादेव
ठक् ठक् ठक् ठबक चढी घोडी,

पेला राणी नै हरस हुयो
पण फेर जान सी निकल गई,
कालजो मुंह कानी आयो
डब डब आंखडिया पथर गई,

घायल सी भागी मैला में
फिर बाच झरोखा टिकया नैण,
बारै दरवाजै चूडावत
उच्चार रयो थो वीर बैण,

नैणा सूं नैण मिल्या छिण में
सरदार वीरता बिसराई,
सेवक नै भेज रावलै में
अंतिम सैनाणी मगवाई;

सेवक पहुच्यो अंतःपुर में
राणी सूं मागी सैनाणी,
राणी सहमी फिर गर्ज उठी
बोली–कह दे मरगी राणी,

फिर कह्यो–ठैर लै सैनाणी
कह झपट खड्ग खींच्यो भारी,
सिर कट्यो हाथ में उछल पड्यो
सेवक भाग्यो लै सैनाणी,

[परिचय —श्री सरकर्ता प्रकृति री कोमल गोद मे किलोल करणैवाला रगीला कवि है इणा री, 'कलायण' 'दस देव' और 'समय वायरो' नाम री तीन पोथ्या राजस्थानी भाषा मे जनता री जीभ माथै नू नै नखरै स नाच घालै है। प्रकृति वखाण मैं तसवीर सी कोरणी और समय सारू चालणो, दो गुण इया मे पतजी हाळा सागी मिलै है। बीकानेर राज्य थका कळायण माथै इया नै पाच सौ रिपिया मिल्या हा । हिन्दी मैं श्री मैथलीशरण जी रो 'जयद्रथ वध' नै श्री रामनरेश जी रा 'स्वप्न, पथिक, मिलन' जिसा खड काव्या री तिरिया इणा रै 'बटोही' करुण काव्य मे भव्य भावुकता तथा विमल व्यक्तित्व सामो दीखै है। कवि री भलैं ही केई पोथ्या छपे विना पडी है, जका री मुरधर रै जणै २ नै घणी उडीक लाग रयी है।

कवि पदरै वरसा सू माध्यमिक मदरसै मे टाबर भणावण रो काम करै है। पण। मुळकतै मू ढै रा मीठा बोल दुग्ग पर रोवण हाळी इया और 'आप रो उनाड'र पारको सुधारण हाळी आदत देरया, आदमी भूजळो हुज्यावै है। औ गाव कालू रा वासी है। आपर गाव री आखी सस्थावा मे भरपूर भाग लेवै है नै सुरसुती मिदर रा पक्का पुजारी है]

वखतां-री वात

आ हरखचद री हेली वखता-री वात बतावे
हो बरसण री जद मौको पण काळा घन न आवे
बाजरड़ी पीळी पड़गी कण री ना छा' गिरावे
वे टूम अटावे मेजी जद हरखू रकम चुकावे
आ हरखचद री हेली वखता-री वात बतावे
वखता-रा नाढा ठाकर छा माग नारळी ल्यावे
मोठा रो मुट्टी आटो मावड़ली बैठ बिणावे
बालकिया हाडा लेली मा भूखी पेड़ै बावे
आ हरखचद-री हेली वखता री बात बतावे
कारीगर ऊभो कापे मजदूर भड़ा आवे
जद भूख भूख नै नखता मोटाड़ा चट्टल ठावे
चूनो स चढे अकेली ऊंची अड़ै पर आवे
आ हरखचद री हेली वखता री वात बतावे
यूं डरता चूनो ढावे ना कामण चेतै आवे
चट गट गट चढै निसरणी भूखी नै चक्कर आवे
जद काल बणै है वेली दुखिया-रो दुख मिटावे
आ हरखचद री हेली वखता-री वात बतावे
कचैन्स नाचै गोटी जद हरख चंद खुद दीठो
अण गाल निकाळी मारी अण मरी जान नै मारी
के मुफ्त री मावे मेला अणहूंता तैनर आवे
आ हरखचद री हेली वखता री वात बतावे
कारीगर नाचे आया 'कापी-रा लोभा दीना

निन्याणवें

बसतां-रा प्राण पखेरू मुकती रा मारग लीना
हाळी रे खांधे मेली खोड़ा में खोड़ पुगावे
आ हरखचंद री हेली बसतां-री वात बतावे
जगल में फाग रमाळिया गिरभा काया-ने चोरे
सुख ओभर आतड़िया भूखा रा हरजस गोरे
घर टाबर जोवे गेली म्हारी माऊ कद आवे
आ हरखचद री हेली बखता री वात बतावे
भूखा तिसा सो रैवै माऊ-री आसा माथे
पण! आज अणमणा दीसे, पड़ रेत रात रै साथे
दिन गे जावै हेली जद हरखू आद डरावे
आ हरखचद रा हेली बखता री वात बतावे
बखता री हुई भुणाई घण-रूप काल बण आयो
पाणी बेहद बरसाओ धनपत रा कुटुम्ब डुबायो
इस पद दबादब हेली हरखू नै हाथ दिखावे
आ हरखचद-री हेली बखता-री वात बतावे

दीन किसान

केई मौजां मांणे जोर
केई दोजख भोगे घोर

चिलमिल चोरां लूवां चाले
घू खाड़ी-सी लागे लाय
उन्हाळो आग बरसावे

तातो पाणी, झीणी छाय
चूजा खोदै धरा सुधार
मद पीवै मालक बण ओर
कैई मोजा-माणै जोर

चौमासे रा झड़ी लग पड़ी
हलियो बैंला पड़गी रात
विना मदैया भाजै राव्यू
आटा अगनी नीरो गात
घोरा मगरा हाली बैल
भूखा दीन, नाथ-रा चोर
थैई मोजा-माणै जोर

लूरी डर लारा कुरलाय
जाली ओर भराखा खाज
टाबर धूड़ आखरी राल या
मेलो करियो नवला नाज
करसा कावड़-आवड़ माथ
धनपत युद्ध मचावै सोर
थैई मोजा-माणै जोर

घाम करे उघाड़ी काया
बली चामड़ी माछर खाय
प्राण मिला रेत में देवै
हरिया खेत देख हरखाय
ना जाणै निर्दया-री घात
घोरा ब्याज बधावै चोर

कैई मोजा-माणै जोर
कैई दोजख भोगै घोर

सौनै चादी रा टुकड़ा पर भाटै रा भगवान रीझै है
मिन्दर री बळती भट्या मे भूखै नर रो खून सीजै है
महला मे दारूड़ी मभकै भूखा रोवै रोटी रोटी
कुण जाणै कद सुख सू रहसा कद जासी आ वेला खोटी

श्री त्रिलोक शर्मा

[परिचय—डूंगरगढ़ वासी श्री त्रिलोक शर्मा राजस्थानी में नवे जुग री नुई कविता लिखण अगालो उठतोड़ो कवि है। इण री कवितावा में साम्यवाद रो सोवणो सुर गूंज रयो है। श्री शर्मा आपरी कल्पना नै चोखी भासा मे बाधणै री बरावर चेस्टा राखै है। राजस्थानी कविता कवि सू मोकळी आसा राखै है।

ऊगतो सूरज

कुरझां रो रो रात बिलाई, अम्बर रा तारा झड़ पड़्या
काळी पीळी आंधी आई, रूंखां रा पत्ता सै झड़्या
आभो घर घर धापण लाग्यो, कड़ धड़ करती बिजळी कड़की
च्यारां खानी मच्यो अंधेरो, वसुंधरा री छाती धड़की
पापी बैठ्या मौज करै है, धरती धूजै भारा मरती
गली गली में रुळे भेड़िया, भेड़ा चालै डरती डरती
सोनै चांदी रै टुकड़ा पर, भाटै रा भगवान रीझै है
मिंदर री म ती भट्या में भूखै नर रो खून सीजै है

(२)

भगवा पहर्‌या राख रमाया, लोगां बण जग नै टग खावै
और गरीबां रो शोषण कर, चिलमां पीपी दम्म लगावै
महलां में दारूड़ी भभकै, भूखा रोवै, रोटी रोटी
कुण जाणै कद सुख सूं रहसा, कद जासी 'आ बेला खोटी
जीणै री सामा घटगी है, भूखी जनता है अरड़ाई
मिनख करै आपस में बातां, ईसी टेम मळै मत आई

(३)

पण पूरब खानी थे देखो, बो ऊगै सूरज लाल लाल
सोनै री किरणां फूट रही, पाप्यां पर भूं वे आज काळ
धरती रा भूखा बेटा अब, अंगड़ाई लेकर जाग रह्‌या है
झोळी झण्डा आज उठा, धरती रा बैरी भाग रह्‌या है
सुख सूं मळै मजूरी रहसी, कुण तड़फैली भूखां मरती
हळ लै हथियो किरसाण मुळक बो करसी हरी भरी धरती

चेतो कर कर चाल जवानी

खेता री छाती पर सींच्यो, खून पसीनो हल नै जोत
काल पड़्यो पछतावे दुनिया, मिनख मरे ग डक री मौत
काम मिलै नहीं कोड़ी रो रे, जुल्म करै शासन दिन दिन
भूखा माणस सिसक्या नाखै, रात बितै तारा गिन गिन
कंगालां नै किचर किचर कर, महल मालिया हसता जावै
दलै मानखो ठोकर खातो इज्जत वेचै माण घटावै
चेतो कर कर चाल जवानी, मैं तनै आज चेताऊँ
अरे उलट दे जुलमी शासन, साची बात बताऊँ

(२)

रोगै सूं कद कष्ट कटैलो, न मिलसी खावण टुकड़ो
हाथ जोड़ कर सीस झुकाया, कुण सुणसी थारो दुखड़ो
मानवता री लाशा माथै, चढ्या निशाचर मुलकै
इज्जत लुटती देख जगत री, आभो आखू टलकै
छिया में काळो छिण में धोलो रूप जामनो बदलै
राग रंग में डूब्या शासक, क्यूं जनता री सुध लै
आभै उड़तो पछी बोल्यो, सुण तनै गीत सुणाऊ
अरे ! उलट दे जुलमी शासन साची बात बताऊ

(३)

एक नयो ससार बसावण, बदली चाल जवानी
जो मुरदा में प्राण फूंक दै गा तू राग सुहानी
हाथां बिच में शस्त्र पकड़कर, जड़ नै चेतन कर दै
भूखा नगा भिखमगा में, आज बगावत भर दै

तू माता रो साचो बेटो, जीत धरा जद आसी
पुलक उठैली धरती माता गीत विजय रा गासी
जाग जवानी से अगड़ाई, मैं तनै खड़ो रिझाऊ
अरे उलट दे जुलमी शासन साची बात बताऊ

(४)

बीत गई सो बीत गइ, तू अब मत चिंता कर रे
आज मौत सू लड़णो पड़सी, जान हथेली धर रे
रणचण्डा हुकार करै तू रिपु रो खून बहाई
माथ कटाकर मर जाइ पण मा री लाज बचाई
कगाला री ताकत लख बैरी रो सिर चकरावै
थारी इज्जत तू रखैला, दूजो राख न पावै
चेतो कर कर चाल जवानी मैं तनै आज चेताऊ
अरे उलट दे जुलमी शासन, साची बात बताऊ

पावै थारी सरण जगत रा जीव बिसायत
राज कोप रै आज मो धण विरह सतावत
लेजां मूक संदेस यक्ष री अलका नगरी
चढती भोल सीस चानणी महला बिखरी

श्री नारायण सिंह भाटी

परिचय–कुँ नारायण सिंह भाटी जोधपुर रा अेक आछा प्रतिभा आली कवि है। श्री भाटी अबार महाकवि कालिदास री अमर रचना मेघदूत रो अनुवाद राजस्थानी भाषा में कियो है, जको पोथी रै रूप में छप चुक्यो है।

कवि राजस्थानी भाषा में मेघदूत से अनुवाद इसो सान्तरो कियो है के हिन्दी रा कई विद्वान नै कई साहित्यिक पत्र उणरी मोकली मोकली प्रशसा करी है। मौलिक रचना लिखणै सूं अनुवाद करणो घणो दोरो है पण ओ कवि आपरै काम मे पूरो सफल हुयो है। इत्ती ओपती रचना राजस्थानी साहित्य में देणै रै कारण कवि बधाई रो पात्र है।

मेघदूत

पड़ी चाकरी चूक धर्णी जद घर्णो रिसायो
भुरती कामण छोड रामगिरि यच्च सिधायो
जनक सुता रै स्नांन जेथ रो निरमळ पाणी
गहरी बिरछां छांह क्यू न कदै बखाणी

(२)

उण परबत पर केक बिताया दाड़ा दोरा
ढळियो भुजबन्द हाथ रूप रंग पड़िया पारा
देख्यां लगत असाढ सिखर सू बादळ जुड़िया
जाणै गज मतवाळ खेलता भाखर भिड़िया

(३)

देखण लागो यच्च आंखड़ी आंसू भरिया
चीतै मन कुरळाय आज आ किसड़ी विळिया
निरख्यां ओड़ा मेघ सजोगी चंचळ होवै
मारा काई हवाल कामणी कठ न होवै

४)

ढळता माथ असाढ अजू र्णो सांवण समियो
घण जीवण रै लोभ यच्च रो हिवड़ा भमियो
मेलण मेघ संदेस मोद मन में भर लीनो
फूल चमेली चाढ मेघ रो स्वागत कीनो

(५)

कठै अगन, जळ, पवन, धुवैं रो मेघ अदेसो
कठेक पाटक पुरख लिजावण जोग संदेसो

भूल्यो इतरा भेद वीणती मेघ करंता
न चेन अचेतण ग्यान काम कयाण चदतां

(६)

पुस्कर आवर्तक मेघा रा वंश निभावे
धारै मनरा मेव राज रो दूत कहावे
करू वीणती धण बाळुता भाग हियेरो
भळ मोटा नट जाय नीच रो 'हा' न भलै रो

(७)

पावे थारी सरण जगत रा जीव विखायत
राज कोप रै मान मो धण विरह सतावत
लेजा मूझ सदेस यक्ष री अनका नगरी
चदती मोळै सोस चानणी महला बिखरी

(८)

जावतड़ा असमान पथ री आसा करती
पेखै निराठ निरहणिया मुख केस सवरती
बिसरावे धुण कथ कामणी मेघ निरखता
जिको न परवस होय अमीणी ओळ बिलखतो

(९)

पड़ै न पथ में निधन बिलखती माभी मिलसी
गिणती दुख रा दिवस जीव रै जनता घुळतो'
कथळो हियो कुसम विजोगण प्रीत भरीजे
मिलण आसरो अेक जिकण मेंभलो पतीजे

(१०)

साथै मुधरो पजन बहता मन बिलमावै
डाबा चात्रक बाल सुरगा मोद जतावै

गरभीजण अछमान बुगलिया मिळवा आई
इदका हुआ सुगन लेयता मेघ विदाई

(११)

सुणता मुधरी गाज तणीजै नाग छतरियां
सुणता सागै धोक इछरी हडै पगतियां
कंवल नाल ले मग पयाणी पाबासर नै
फरछी धारो साथ छातरी डारा फरनै

(१२)

चित्रकूट सो मैण राम रै चरण रमायो
होता था सू मेळ नैण सू नीर वहायो
इती प्रीत री रीत मिलण रो माद वधायो
ले लो सैणा सीग्र सुरगा मेघ विधावो

भूल्यो इतरा भेद वीणती मेघ करता
न चेत अचेतण ग्यान काम कबाण चढता

(६)

पुस्कर आवरृतक मेघा रा वस निभावै
थारै मनरा मेघ राज रो दूत कहावै
करू वीणती घण बाळुता भाग हियेरो
भळ मोटो नट जाय नीच रो 'हा' न भलै रो

(७)

पावै थारी सरण जगत रा जीव चिलायत
राज कोप रै काज मो घण विरह सतावत
लेजा मूझ सदेस यच्छ री अलका नगरी
चढती भोळै सोस चानणी महला बिखरी

(८)

लावतड़ा असमान कथ री आसा करती
पेखै निराठ निरहणिया मुख केस सवरती
बिसरावै कुण कथ कामणी मेघ निरखतो
जिको न परबस होय अमीणी ओळ बिलखतो

(६)

पड़ै न पथ में विघन बिलखती भामी मिलसी
गिणती दुख रा दिवस जाव रै जनता धुळतो
फ्वळों हिया कुसम विजोगण प्रीत भरीजै
मिलण आसरो अेक निकण मैंभलो पतीजै

(१०)

साथै सुघरो पवन बहता मन बिलमावै
डाबा चात्रक माल सुरगा मोद जतावै

गरमीजण असमान बुगलिया मिळवा आई
इदका हुआ सुगन लेवता मेघ विदाई

(११)

सुणता सुवरी गाज तणीजै नाग छतरियां
सुणता सागै घोक हसरी हटै पगतिया
कंवल नाल ले मग पयाणा पाणासर नै
करसी थारो साथ सातरी हाथ करनै

(१२)

चित्रकूट सो सैण राम रै चरण रमायो
होता थासू मेळ नैण सू नीर बहायो
इसी प्रीत री रीत मिलण रो साद वधायो
ले ला सैणा राम सुगा मेन सिधासो

कुण जाणै, कद आसी काल
दो दाणा पर, बिछसी जाल
मधु आवै, फूला मै खेल
लूआ रा लपका भी झेल
अणचाया सापा नै पाल
कुण, जाणै कद आसी काल

श्री

[परिचय—श्री रतनलाल दाधीच हिन्दी नै राजस्थानी भाषा रे माय लिखणिया कवि नै लेखक है। जिका री कविता नै कहानी भावा री बाढ़ मैं लथपथ पड़ी है। 'साड़ी के छोर' नाम सूँ एक कहानी समह हाल ही छप'र आयो है जिको हिन्दी भाषा रे मायने है। अबार श्री दाधीच श्री सादूल संस्कृत कालेज में पढाणए रो काम कर रया है।

कुण जाणै, कद आसी काल
दो दाणा पर, बिछसी जाल
मधु आवै, फूला मैं खेल
लूआ रा लपका भी झेल
अणचाया सापा नै पाल
कुण, जाणै कद आसी काल

श्री रतनलाल दाधीच

[परिचय—श्री रतनलाल दाधीच हिन्दी नै राजस्थानी भाषा रे माय लिखणिया कवि नै लेखक है। जिका री कविता नै कहानी भावा री बाढ़ में लथपथ पड़ी है। 'साड़ी के छोर' नाम सूं एक कहानी संग्रह हाल ही छप'र आयो है जिको हिन्दी भाषा रे मायने है। अबार श्री दाधीच श्री सार्दूल संस्कृत कालेज में पढावण रो काम कर रया है।

आ नैणाँ री

आ नैणां री प्यास कदी ना बुझणै पाणी।
समन्र री छाती पर उठती भाळ्या देखी
फूला मैं बैठी तितल्या री पाख्या देखी।
आभै म सूती बिजली री आख्या देखी
प्यास बुझाणै आली सारी साख्या देखी ॥
पण, गहणे औ घांव कदी ना भरणै पाणी

मस्त बायरो आजावे पैलाया झोली
कोयलड़ी जद आख मींच हो आवै बोली।
गाती गाती सूजावे फूला री टोली
नई नई सी याद, फाड़कर जूणी चोली—
कोया नीचे अणजाणी आ लुल् जाणी

सीधो सीधो चाल

परणी, सीधो सीधो चाल
मिस्या न, मिटसी काला लेख
कुण तोड़ी होतव री रेख
नीचे सू ऊपरता देख
टरकाल छेदां मे मेख
दिवळे ने चेते सू गम्म
एक सी पग दे

सीधो सीधो चाल

कुण जाणै कद आसी काल
दो दाणा पर चिड़सी जाल
मधु आवै, फूला में खेल
लूआं रा लपका भी झेल
अणचाया सापां नै पाल

बावलिया, बडलै री छाव
सूतो है, फैलाया पांव
लगा रह्यो, जीवण रा दाव
पण, ना जाणी काली भाव
डूंगर रै नीचै री ढाल

बाँध बाँध करतब री सींव
धरती री हालै है नींव
काल झूँपड़ो पड़ग्यो, देख
आज धूजतो मिंदर देख
उलटग्या बड़ा बड़ा रा पाल

साजन खोल !

साजन खोल किवाड़
अम्बर होग्यो लाल
कलायण ल्यायो

अलगोजो

दात भींच बिजली कड़काई
काया सू गरजन लपटायो
मरती मरती
आंसू झरती
साजन खोल किवाड़
कित्ता अठे बणाया पिंजड़ा
राखी न थोड़ी चूक
पंछी आयो, उड़ग्यो पाछो
बोल्यो न चाल्यो, मूक
लिया सदेस
पी कै देस
साजन खोल किवाड़
अगम पंथ जोया हिवड़ै सू
भली मिलाई मीत
पलका मे सोया रातींदा
ले सिरहाणै प्रीत
कोया फेर
थोड़ी देर
साजन खोल किवाड़
बड़ा डाल सींच्यो तरवर न
कालो पड़ग्यो देख
सूता सूता रात गुजरगी
मिट्या माल रा लेख
मॅंदरा मॅंदरा
रोया धोयाँ
साजन खोल किवाड़

जगजलो अेला सकै नग चानणो दिव रो
ऊभ विरहण ज्यू गिणै त्यू आवणो पिव रो
बण न भोपो बावलो भगवान बण कर जी
तू जी भलाई अेक दिन पण मिनख बण कर जी

श्री श्रीमन्त कुमार व्यास

[परिचय — श्री श्रीमतकुमार व्यास राजस्थानी भाषा रा एक प्रतिभाशाली कवि है जिका री कवितावा में जोश उफण रयो है। 'इन्किलाब तो आसी रे' नाव री कविता मे इन्किलाब रो सुर है। 'ओल्यू ड़ी' माय हिचक्या लबालब होय'र थारे ढुल ढुल पड़ रयी है।

अे इण टैम 'पवनपुत्र' नाम सू एक प्रबन्ध काव्य राजस्थानी भाषा रै माय लिखण मे लाग रया है। आरो एकाकी नाटका रो समह हाल ही कागरेस गाव माय बड़गी' नाव सू छप'र आयो है जिको राजस्थानी भाषा नै नुई देण है। समाज री सड़ी गली, थोथी रीत्या नै झटकै सू तोड़ र नयै रूप में खड़ो करणै रै प्रयास नै सही रूप देणै रै सामै सफलता हाथ जोड'र खड़ी दीख पड़ रयी है। समाज रै माथै ऊपर कलक रा टीको पर्दाप्रथा नै मेटण री शुरूआत श्री व्यास आपरै घरा सू करी है। समाज रो घोर विरोध होता थका भी श्री व्यास लाडणू नगरपालिका री सदस्या आपरी पत्नी श्रीमती शारदा व्यास नै पर्दै मायलै घोर अधारै सू काढ़'र स्त्री जाति मे जागणै रो जोश भर दियो है।

आप एक आछा कामेसी कार्यकर्ता है साथ ही नुई ढग री बालशिक्षा सू भी मोकळो प्रेम राखे है। आप लाडणू रा दाधीच ब्राह्मण प० नानूरामजी व्यास रा सुपुत्र है। राजस्थानी साहित्य नै आप सू घणी घणी आसावा है।]

शेखरचन्द सक्सेना

राखी

भाण भलाई बांध राखड़ी
म्हारा तो खूंजा खाली है
हियो वदाई घटे बावळी
तू रखड़ी बांधण चाली है

मैं दो दिन सूं भूखो बैठ्यो
रावण आगळ टुकड़ो कोनी
लीरम लीरा हुया कपड़िया
तन ढकवा मी चिथड़ा कोनी

फिरता फिरता एड्या घिसगी
और पगां में पड़ग्यो पाणी
पण जग री अे पापी आंख्या
कदे न बांची म्हारी काणी

आभै पर सूं तारा कूकै
धरती री छाती फाळी है
भाण भलाई बांध राखड़ी
म्हारा तो खूंजा खाली है

मैं रोवूं पण अे रुकै नहीं
माळयाणी आंखड़ा ढळकै
मैं चोवूं पण अे चूसै नहीं
कोयां में मोतीड़ा पळकै

जद म्हारे हिव में दुखड़े रा
बे काळा पीळा लोर उठे
बैरण आ काळी रातड़ली
जद जाय कटै ना भोर हुवै

मैं खाय पछाटा पड़ूं, सड़ूं
कुण बूझै राम रुखाळो है
माण भलांई बांध रातड़ी
म्हारा तो खूआ लाली है

मानी थारी बात प बेनड़
इण रमड़ी में प्यार भरयो है
इण रे तार तार में थारे
रोम रोम रो सार भरयो है

इण रे लाल रंग में थारे
दिल रो लाड़ो उमड़ रयो है
बोल बोल पायलड़ी गीत
बाग पांगड़ो रगड़ रयो है

कह दे दिल री बात बापड़ी
इणे याद फिर रातड़ली है
माण भलांई बंध रातड़ी
म्हारा तो मूआ सारी है

मैं भूलो हूं मैं हंसा हूं
पण मरो हाद लियड़मा

पद मी बीग

माता रै दूधै री सौगन
मैं कदै न पाव हटाऊला

तू स्नेह ढाळ बैना हथ में
दे बाध प्रेम सू राखड़ली
मैं मुळक मरू थारे खातर
मळ फूल समझ मळ पालकड़ी

थारा हथ डोरा में पगली
मैं जीवण रिच्छा पाली है
भाय भलाई बाध राखड़ी
म्हारा तो सूना खाली है

गीत

तू भी भलाई एक दिन पण मिनख बण कर जी
जब डबा ज्यावे, हुवै-
गलगल, हियै री पीड़ सू
चौधरा चाले, चुवै
टप टप, समै री भीड़ सू
पण न डगको, कालजो किरसाण रो बण जी
तू भी भलाई एक दिन, पण मिनख बण कर जी
घद सुणावै घूघरा
छुम छुम सुखा री रात में

मकरगोजो

गीत गावै रोवणा
चातक खड्या बरसात में
मण न भालो बादलो, धरडाट बण कर जी
तू भी भलाई एक दिन, बण मिनख बण कर जी
जल जलो जेला सकै
मण चाणो दिव रो
कम विरदण क्यूं गियो
क्यूं आवणो पिव रो
बण न भोलो बावला, भगवान् बण कर जी
तू भी भलाई एक दिन, बण मिनख बण कर जी

ओल्यूंडी

क्यूं सैल लिया पलाह, देखण ओल्यूंडी आई
तू बावली कूंपल स भी, दिखना रे हाथे आवै
था छिण छिण में डोला सू दिवलो ज्यूं ज्यूं मल कर जावै
बिय बादल भी पोहरा में झिगमिग चौगाणा छावै
मैं क्यूं रोवू मालणी, क्यूं दम घरोगी लावै
दिवलो में तेल मकार [illegible] [illegible] [illegible] सुगाई
क्यूं छीन लिया पेलाई देखण ओल्यूंडी आई
धरी परचेरा गुई [illegible] ग माय बांजै
सुणि [illegible] [illegible] में पड रै, निमके, [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] पूंछे घट दमको भीजै
[illegible] री [illegible] मैली के पाणा रो दिल पणजै

पद सी माहम

झुक जावै डूंगर हेटो, मिट जावै सा फरड़ाई
क्यूं सीख लिया पलाइ-बैरण ओल्यूंडी आई
चिड़िया री छमछम छम छम कद पाछी मोड़ सकेला
सावण भादू री झिरमिर कद मारग रोक सकेला
पण जे तू आई लेकर भूखा, नागा, दुखियारा
वारैं अधरां सूं सुणिया जे इंकिलाब रा नारा
तो पग पाछा आवैला भलू मल अखिया छलकाई
क्यूं सीख लिया पेलाड़ बैरण ओल्यूंडी आई

चकवो-चकवी

अेक रूंख री एक डाल् पर
दोय पखेरू बैठ्या रोळै
अलगी अलगी चूंच आपरी
जद पे दोनूं घणी घिगाणी
जद पे दोनूं
अेक साथ ही दिन भर खेलै
चुग्गो चुग्गे, रम्मे, रम रम
प्यार करै, पुचकारै
जाणे सदा सु गो दिनड़ो रहसी
सूरज इबहल कदे न ढलसी
ऐड़ा सपना साच हुवे कद
लोर भळै बरसात बणै कद
सो भी रलमिल दोन्यूं नाचै

पाख दखेरै प्यार करै पुचकारै
छोला चढ़े, किलोला करै
चूंच सू आपसरी में
भूख जगावै
प्यास जगावै
काम जगावै
हिव में हारया पड्या हुया
अरमाण जगावै
पण बेरण सभया आजावै
मनड़ै री मन में रह जावै
सूरज ढलै भलै अंबर सू
चांद चढ़ै इमरत बरसावै
तारा छाइ रात हुवै जद
मधरी मधरी पून चलै
उण खनलै नीम परा बैठ्या
दिन भर रा अलगा रेवणिया
बे मोर मोरनी, चिड़ा चिड़ी
भेला होग्या बण मिड़ी मिड़ी
उण टैम बापड़ा
दोय जिनावर
चायो सतजुग, त्रेता, द्वापर
कलजुग रो मेलो हो यावर
पड़ग्यो इण जोड़ै रै माथै
चावै, पण रह सकै न बापड़ा
रात्यू साथै

चकवो-चकवी

मीरा री कैवत साची है
घायल री गत घायल जाणे
ओड़ो घायल कुण
के आरी पीड पिछाणे
वोटर लिस्ट में नाम
इणां रो लिख्यो बायनी
जणा भला चमगूगा कोनी नेरूजी
बिण मतलब आरी बातां ताणे
चौंठ मायने अदी 'रमण'
कचन रो थोड़ो रचमान
भबको दिखला द्यै
बिड़ला जो चटके
जिया चील छिपरै ने झपटै
ओर करोड़ा रपिया पटके
जाच करावे
विज्ञान जाणिया ने लगवा कर
आ रा छगला हाल दिखावे
पण ओ पापी
ओक रुख री एक डाल पर
बैठ रात में अलगा अलगा
कह चकवो
कह चकवी
कह दू बात
कटे ज्यू रात

इन्किलाब तो आसी रे

चोटी आव्यो लाग उगिगो, धरती हुइ उदासी रे।
समदर उफ (इवाला खावे, इं किलाब तो आसी रे॥

मिंदरिये में (.दलो सोयो, जगमग जगमग बातो रे,
साथ छाड़जी बळा जिरड़ा, तुया छेड़ो परमाती रे,
काली मोली रात अन्धेरी, क्यू करगी कुरलासी रे,
धरती अम्बर सामो जाय, लिख लिख भेजी पाती रे,
कै दे मोती गगा चीचलो, कै दे नीं बत फासी रे॥ समं०॥

डूगर धूजे थरहर थरहर, लोही री बरसे बदली,
लाय लागगी च्यारू न्हानो, ऐड़ी कुण होली मगली,
मिनख जमारो बणता जावे, यू ज्यूं माटा री ढगली,
मागण मण इडसा नै चाली, आन हवाया ए सगली,
धरमी पार उतरसी पछी, पापी गोता खासी रे॥ समं०॥

कौडी खट्टे रूले मानखो, खारा लागे अणखावण,
और लड़े आपस में सगला, बोल रहो ना बतळावण,
डू कै माथे बैठ टींगरी करसे री, कर करड़ावण,
चौबारै चढिये ठाकर रे, हिये लगा देवे जावण
दा पाया रै बीच पासीजी, इमें न ठोआ उठसी रे॥ समं०॥

इन्किलाब नै लावण खातर, लाखां खून बहायो हो,
कमतरिये करसे रे ताइ, ताज जीत कर ल्यायो हो,
वीर बालुजो आजादी रो पौधा नयो उगायो हो,
पण वैरी कर सक्यो न रिच्छा, डागर खेत चरायो हो,
माखण माल मसखरा चरग्या टुकड़ा मलिया बासी रे॥ समं०॥

पेत मानगा पेत पेत तू, हरिणाथ ले धा देतो,
नांव चले थारो अद पेट, गांटा में माया केडो,
फिनर फिचर पण थारा ये तू, ह न गुद नेडा नेडो,
हरखे करसा मुळके मगूर तू, हर्षकार लेया पेडा,
सेवा रा पथ साचो काढ़ें मरदे सार उपासो रे ॥ समु०॥

टमरक टूं

टमरक टूँ । टमरक टूँ ।
एक पमेको,
बैठ खेजड़ी,
मिसरी घोली सुर सुर सूं,
टमरक टूँ । टमरक टूँ ।
सूनी रोही
जागी सोई,
पाछी बोली यूँ री यूँ,
टमरक टूँ । टमरक टूँ ।
बोल अजाण्यो
मैं के जाण्यां !
हुई गिद् गिदी म्हारै क्यूँ !
टमरक टूँ । टमरक टूँ ।

अलगोजो

कमतर रो साथी अलगोजो
करसे रो साथी अलगोजो

ओ मन री मोजा छाय करे
घुल धाना बाती अलगोजो।

सुण इण री राग कमेड़ी रा
अनमोल गटर गूँ थम जावै,
सुण इण री राग चिड़कल्या री-
चोफेरी चूँ चूँ दब जावै,

ओ गूँज पुगा दे मरवण नै
ढोलै री पाती अलगोजो !

जो मींझर मधरो हिद झीणू
जद बवै बायरो मद भीणू,
ओ बाजे, धरती आभे रो
दे भेल अगूणू आथूँणू,

ओ हेतहलै री लेर उठा
भर देवै छाता अलगोजा।

जद हुवै जेठ रा दिन टणका
जद भर्‌या भादवो घहरावै
जद खलो नीगलै धाना में
जद चैत चानणी छिटकावे

ओ एक सरीखो सह रुत में
सगला रो साथी अलगोजा।

सपनाँ रो साथी अलगोजा।
सुख दुख रो साथी अलगोजो।